ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

बैसाख-ज्येष्ठ संवत् नानकशाही ५५८ मई 2026 वर्ष १९ अंक ९

अजेय बाबा बंदा सिंघ बहादुर

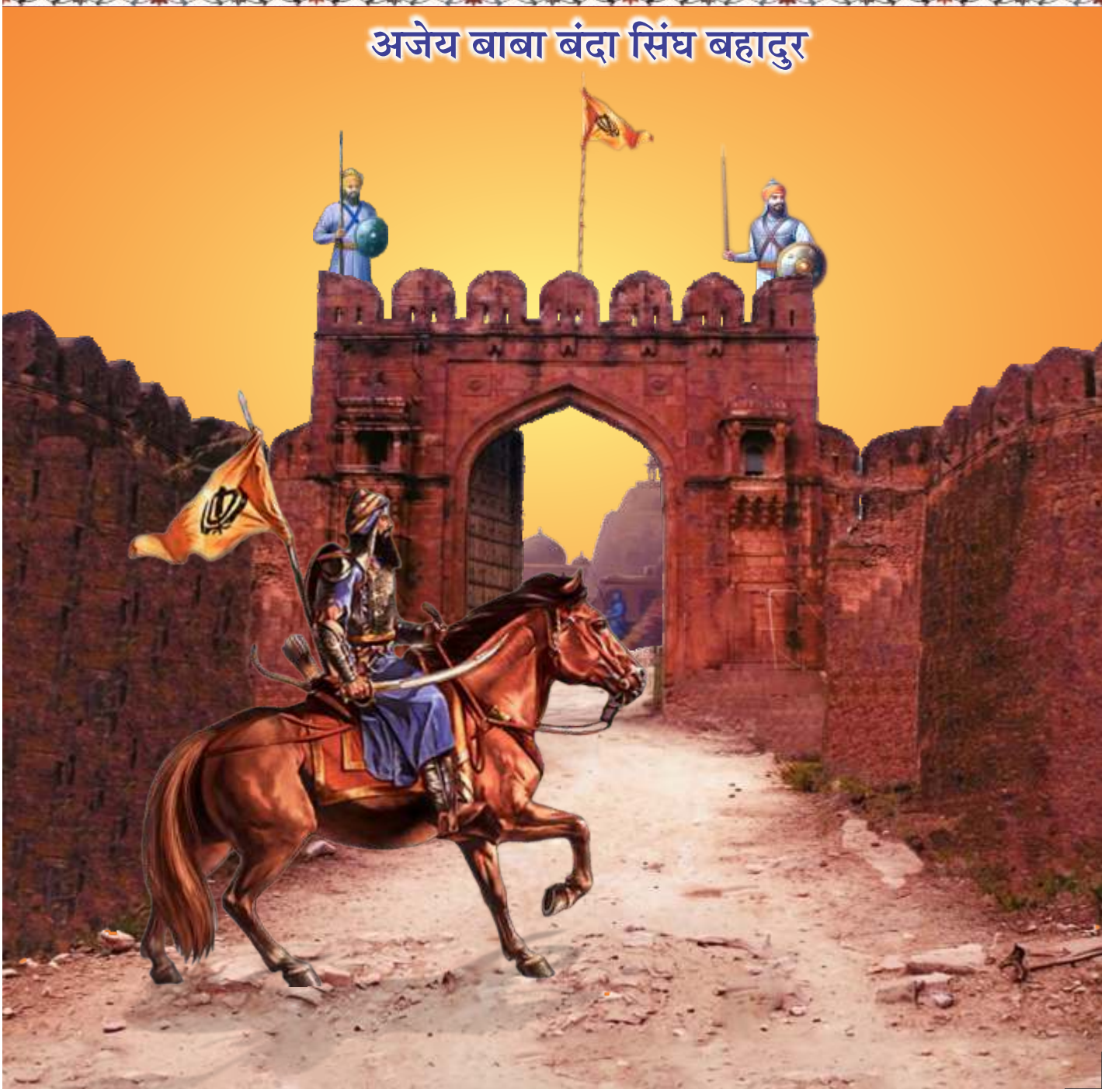

दाख़िला सूचना

पंथ-रत्न जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा
इंस्टीट्यूट ऑफ अडवांस्ड स्टडीज़ इन सिक्खिज़म
बहादरगढ़ (पटियाला)

नये दाख़िले के लिए रजिस्ट्रेशन शुरू

बैचलर ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज़ (गुरुद्वारा मैनेजमेंट)
BACHELOR OF MANAGEMENT STUDIES (GURDWARA MANAGEMENT)

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब वर्ल्ड यूनिवर्सिटी, फतहिगढ़ साहिब)

त्रैवार्षिक डिग्री कोर्स

योग्यता और फीस

- शैक्षिक योग्यता 12वीं कक्षा (कोई भी ग्रुप) उत्तीर्ण हो तथा उम्मीदवार गुरसिक्ख होना चाहिए।
- 12वीं कक्षा के इम्तिहान के परिणाम की प्रतीक्षा कर रहे उम्मीदवार भी अप्लाई कर सकते हैं।
- उम्मीदवार की आयु-सीमा अधिक से अधिक 22 वर्ष हो।
- वार्षिक फीस केवल 5000/- रुपए है।

सुविधाएं

- रिहायश के लिए फ्री होस्टल के अलावा हरा-भरा चौगिर्दा, सुंदर पार्क, खेल और पुस्तकालय की सुविधा।
- उच्च योग्यता वाला स्टाफ, स्मार्ट क्लास-रूम और कंप्यूटर लैब की सुविधा।
- शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अदारों में नौकरी के वक्त प्राथमिकता।
- धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से भोजन (लंगर) आदि के ख़र्च के लिए 2000/- रुपए प्रति माह वज़ीफ़ा।

उच्च शिक्षा और रोज़गार संभावनायें

- यूनिवर्सिटी नियमों के अनुसार एम.बी.ए., एम. कॉम. के अलावा धर्म, इतिहास आदि विषयों में एम. ए. या पोस्ट-ग्रेजुएट डिप्लोमा कर सकते हैं।
- सरकारी और ग़ैर-सरकारी अदारों में स्नातक स्तर की असामियों के लिए योग्य।
- गुरुद्वारा प्रबंध के अलावा अन्य समाजसेवी और प्रशासनिक अदारों में सेवा करने के योग्य होंगे।
- देश-विदेश में गुरुद्वारा साहिबान में सेवाएं देने के योग्य होंगे।

दाख़िला संबंधी अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

97810-10888, 90416-20861, 75270-56756

E-mail : tohrainstitute@gmail.com

Visit us : www.sggswu.edu.in

2000/- रुपए प्रति माह वज़ीफे की सुविधा

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी,
शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब।

हरजिंदर सिंघ एडवोकेट
प्रधान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब।

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

वैशाख-ज्येष्ठ संवत् नानकशाही 558
वर्ष 19 अंक 9 मई 2026

संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
खिदराणे की जंग : मर्मस्पर्शी ऐतिहासिक अध्याय 7
–डॉ. जगजीवन सिंघ
बाबा बंदा सिंघ बहादुर का युद्ध-अभियान 15
–स. परमजीत सिंघ 'सुचिंतन'
सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया 18
–डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'
कदम बढ़ाओ! (कविता) 21
–श्री प्रशांत अग्रवाल
.... सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया 22
–प्रो. बलकार सिंघ
सिक्ख इतिहास की अहम घटना : छोटा घल्लूघारा 28
–प्रो. मनजीत कौर
मनुष्य और श्रम : गुरबाणी के आलोक में 32
–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
केश : गुरु की मुहर 36
–डॉ. कशमीर सिंघ नूर
कामि करोधि नगरु बहु भरिआ . . . 39
–डॉ. मनजीत कौर
ख़बरनामा 44

गुरबाणी विचार

हरि जेठि जुड़ंदा लोड़ीऐ जिसु अगै सभि निवंनि ॥
हरि सजण दावणि लगिआ किसै न देई बंनि ॥
माणक मोती नामु प्रभ उन लगै नाही संनि ॥
रंग सभे नाराइणै जेते मनि भावंनि ॥
जो हरि लोड़े सो करे सोई जीअ करंनि ॥
जो प्रभि कीते आपणे सेई कहीअहि धंनि ॥
आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवंनि ॥
साधू संगु परापते नानक रंग माणंनि ॥
हरि जेठु रंगीला तिसु धणी जिस कै भागु मथंनि ॥४ ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३४)*

पंचम पातशाह बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में ज्येष्ठ मास के वातावरण और इस मास में की जाने वाली जीव-जगत की क्रियाओं की पृष्ठभूमि में मनुष्य जीवन रूपी वर्ष के इस खंड को प्रभु-नाम के व्यक्तिगत मनन और सामूहिक अथवा संगती विचार द्वारा सफल करने का सुमार्ग बख़्शिश करते हैं।

गुरु जी फरमान करते हैं कि ज्येष्ठ मास में परमात्मा अथवा उसके नाम के साथ जुड़ना चाहिए, जिसके समक्ष सभी जीव झुकते हैं अर्थात् जो सर्वशक्तिमान है। परमात्मा ऐसा मित्र है जिसका दामन थामने से जीव को कोई अन्य त्रास जकड़ नहीं सकता अर्थात् यम या मृत्यु का भय उसको भयभीत नहीं करता।

गुरु जी कथन करते हैं कि सांसारिक लोग प्राय: हीरे–मोतियों को प्राप्त करना चाहते हैं और प्राप्त करने के पश्चात् फिर वे इस भय से चिंतित रहते हैं कि कहीं कोई इन्हें चुरा न ले। परमात्मा का पावन नाम ही ऐसा विशेष हीरा-मोती है जिसे कोई चोरी नहीं कर सकता। मनुष्य के द्वारा नाम की बंदगी करने से सदैवकालीन सुख, आनंद मिलता है। जितने भी रंग हमको अच्छे लगते हैं वे सब परमात्मा के ही रंग हैं। परमात्मा की महान इच्छा ही चारों ओर व्याप्त है। जीव वही करते हैं जो परमात्मा को अच्छा लगता है। जिन जीवों को परमात्मा ने अपना बना लिया है अर्थात् जो जीव उसकी सच्ची स्तुति में लगे हैं उनको शाबाश कहो! मात्र निज प्रयास से (यदि परमात्मा की इच्छा न हो) कुछ भी नहीं होता। यदि ऐसा संभव हो सकता होता तो कोई भी जीव न प्रभु-नाम से बिछड़ता, न ही दुखी होता। सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि हे नानक! जिनको साधु अथवा सतिगुरु का साथ मिल जाए वे आनंद-प्रसन्न रहते हैं। जिन मनुष्यों के मस्तक के भाग्य जागृत हो जाते हैं उनको ज्येष्ठ का उष्ण एवं शुष्क मास भी रंग-आनंद से भरपूर लगता है।

संपादकीय

आओ! अपने लासानी इतिहास का विश्व स्तर पर प्रचार करें!

गुरु साहिबान अकाल पुरख की रज़ा के अनुसार इस जगत में से ईर्ष्या, द्वेष, ज़ब्र-जुल्म इत्यादि बदियों का खातिमा कर परोपकार, नेकी, दया, धर्म की सत्ता स्थापित करने के लिए मानवता के रहबर बनकर आए। गुरु साहिबान ने हमेशा ही हक, सच व न्याय के मार्ग पर चलने को प्राथमिकता दी। निर्बल, निर्धन और निराश्रित लोगों के लिए आश्रय बन कर गुरु साहिबान ने जहां मानसिक तौर पर गुलाम जनमानस का स्तर ऊँचा उठाया, वहां धार्मिक स्तर पर आ चुकी गिरावट को भी दूर करते हुए गुरबाणी-उच्चारण कर समस्त जनमानस को "अपना बिगारि बिरांना सांढै॥" वाली आदर्श जीवन-युक्ति के अनुसार अपना जीवन ढालने की प्रेरणा की। श्री गुरु नानक साहिब ने बदी के खातिमे के लिए गुरबाणी का उच्चारण किया, धर्म-प्रचार यात्राएं कीं एवं मानवता को बदी का सामना करने हेतु नाम-सुमिरन द्वारा बलवान विचारधारा के धारक बनने का उपदेश दिया। बाबर के जुल्म (बदी) के विरुद्ध आवाज़ बुलंद की। उसे जाबिर कह कर संबोधित किया।

इसी विचारधारा को आगे बढ़ाते हुए पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने मानवता की अच्छाई व बुराई, नेकी व बदी, विनम्रता एवं अहंकार, धर्म एवं अधर्म के साथ जान-पहचान करवाई और सम्पूर्ण गुरबाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में एकत्र कर समूची मानवता को स्वतंत्र विचार-शक्ति प्रदान की। गुरु जी ने मानवता के सामने गुरमति का नवीनतम सिद्धांत प्रस्तुत किया कि सर्वप्रथम शांतमयी ढंग से बदी का मुकाबला करना चाहिए। इस सिद्धांत को अमल में लाते हुए पंचम पातशाह ने तत्कालीन हुक्मरान जहांगीर द्वारा दिए गए असहनीय कष्ट सहन करते हुए शहादत प्राप्त की। बदी अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच कर पराजित हुई।

फिर छठम् पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने जब महसूस किया कि अब बदी को बिना सख्ती किए मात नहीं दी जा सकती, तब आप जी ने शस्त्रधारी होकर बदी के विरुद्ध चार जंगें लड़ीं। दसम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इसी विचारधारा पर पहरा देते हुए, "चु कार अज़

हमह हीलते दर गुज़शत॥ हलाल असत बुरदन ब शमशीर दसत॥" का सिद्धांत दृढ़ करवाते हुए कहा कि जब बदी के विरुद्ध सभी शांतमयी उपाय विफल हो जाएं तो तेग (कृपाण, शमशीर) उठानी जायज़ है। सिक्खों ने गुरु साहिबान द्वारा दर्शाए इसी मार्ग पर चलते हुए, बदी के विरुद्ध शस्त्रबद्ध संघर्ष करते हुए अनेक साकों, घल्लूघारों के लासानी इतिहास की सृजना की। गुरु साहिबान की कृपा से सिक्खों ने अपनी दो फीसदी आबादी के बावजूद अस्सी फीसदी कुर्बानियां देकर देश को आज़ाद करवाया। सबसे ज्यादा काले पानी की सज़ा भी सिक्खों ने ही काटी। शहादतों के प्रसंग में इस बार मई माह में समूचा सिक्ख जगत चालीस मुक्तों का शहीदी दिवस, छोटा घल्लूघारा की याद, शहीदी साका पाउंटा साहिब का दिवस और सरहिंद फ़तहि दिवस मना रहा है।

इस गौरवशाली इतिहास को पढ़–सुन कर अपने पूर्वजों पर फख्र महसूस होता है, जिन्होंने कुर्बानी देकर इस लासानी इतिहास को सृजित किया।

आज ज़रूरत है गुरु साहिबान और अपनी कौम के शहीदों द्वारा सृजित लासानी सिक्ख इतिहास का विश्व भर में प्रचार करने की। आज सिक्ख शूरवीरों की गाथाओं को इतिहास के पन्नों से ओझल करने की साज़िशें रची जा रही हैं। ऐसे समय में पंथ-विरोधी मनसूबों को नाकाम करने के लिए समूचे नानक नाम–लेवा और समूची सिक्ख जत्थेबंदियों का फर्ज़ बनता है कि "होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाइ॥" वाली आदर्श जीवन-शैली को अपनाते हुए मानवता के सामने आपसी भ्रातृ-भाव तथा पंथक एकता का प्रमाण प्रस्तुत करते हुए अपने विचित्र इतिहास और गुरमति सिद्धांतों को विश्व भर में प्रचारित व प्रसारित करने लिए लामबंद हों। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के नेतृत्व में पंथ-प्रवानित सिक्ख रहित मर्यादा के अनुसार जीवन जीते हुए उच्चतम आचरण के धारक बन कर अपने को गुरबाणी और गुरमति की अमीर परंपरा के साथ जोड़ें, तभी हमारे ये शहीदी पर्व मनाने सफल होंगे और यही हमारे शहीदों को हमारी श्रद्धांजलि होगी।

खिदराणे की जंग : मर्मस्पर्शी ऐतिहासिक अध्याय

*–डॉ. जगजीवन सिंघ**

सन् १६९९ की बैसाखी वाले दिन एक अलौकिक चमत्कार की तरह घटित 'ख़ालसा सृजन' के बड़े ऐतिहासिक और इंकलाबी घटनाक्रम के बाद, श्री गुरु नानक साहिब के 'निर्मल पंथ' का न्यारा तेज-प्रताप और उजाला (सत्य का प्रकाश) ज्यों-ज्यों बढ़ता गया त्यों-त्यों बाईधार के पहाड़ी राजाओं एवं मुग़ल हाकिमों का दशम पातशाह के प्रति ईर्ष्यालु रवैया, विरोध एवं घेरा और भी, हमलावर तथा संकीर्ण होता गया। फलस्वरूप सन् १७०१ ई. के अंत से लेकर सन् १७०४ ई. के मार्च महीने तक दुष्ट मुगलों एवं पहाड़ी राजाओं के भाड़े के बड़े-बड़े लश्करों ने इक्का-दुक्का मुठभेड़ों के अलावा थोड़े-थोड़े अरसे के बाद सतिगुरु के जांबाज योद्धाओं की अनोखी प्रेम-दीवानी मुट्ठी भर फ़ौज के साथ, श्री अनंदपुर साहिब में चार बड़ी जंगें लड़ीं। इन जंगों की विशेषता यह रही कि चढ़ कर आए मुग़ल और पहाड़ी फौज के टिड्डी दलों को, अपनी बड़ी संख्या के बावजूद, हर जंग में मुँह की खानी पड़ी।

मुगलों और पहाड़ी राजाओं की सेना जब युद्ध के मैदान में सतिगुरु जी से हार जाती तो कोई पेश चलती न देख आखिरकार तिलमिला कर अक्सर कई-कई दिनों तक श्री अनंदपुर साहिब नगर को घेर कर बैठे रहती। ऐसा करने के पीछे उसका लक्ष्य यह होता कि ख़ालसाई फ़ौज को बाहर से कोई जंगी मदद, ख़ास कर रसद-पानी न पहुँचे। निष्कर्षत: भूख और प्यास से बेहाल सिंघों के हौंसले पस्त हो जाएं और वे अपने गुरु का संग अर्थात् श्री अनंदपुर साहिब छोड़ कर भाग जाएँ। तुर्कों और पहाड़ी राजाओं की इस भद्दी व घटिया रणनीति ने चाहे पहले भी कुछेक जंगों में गुरु के प्यारे सिंघ वीरों के समर्पण-भाव, सब्र, संतोष और धैर्य का कड़ा इम्तिहान लिया था, मगर श्री अनंदपुर साहिब की पाँचवी सबसे अधिक लंबी, तथा थका कर रख देने वाली जंग, जो अंदाज़न सन् १७०४ ई. के मई (ज्येष्ठ) महीने से आरंभ होकर, रुक-रुक कर चलती हुई, २० दिसंबर, सन् १७०४ ई. (६ पौष, संवत् १७६१ बिक्रमी)[१] अर्थात् सतिगुरु जी के श्री अनंदपुर साहिब छोड़ने तक निरंतर जारी रही, उनके समर्पण-भाव, प्रेम और सिक्खी आस्था को परखने वाली सबसे कड़ी परीक्षा थी।

इस जंग के आरंभ में सतिगुरु की हज़ूरी में हक-सच और धर्म के लिए अपना आप कुर्बान करने हेतु लगभग पाँच हज़ार जांबाज सिंघ वीरों की फ़ौज मौजूद थी, जबकि दूसरी तरफ़ श्री

* *पोस्ट-ग्रेजुएट पंजाबी विभाग, सरकारी कॉलेज, रूपनगर-१४०००१, फोन : ९९१४३-०१३२८, ईमेल : jsdeumgc@gmail.com*

अनंदपुर साहिब के गिर्द घेरा डालने के लिए समय के ज़ालिम शासकों की हमलावर होकर आई भाड़े की मुग़ल व पहाड़ी फ़ौज की संख्या लाखों में थी। संख्या के असमान पक्ष से दुनिया के इतिहास की यह एक बेमिसाल जंग थी, जिसमें सिंघों की आस्था और कौशल की अजीब परख हुई। एक महीने का युद्ध जब कोई फ़ैसला न कर सका तो ख़ालसा को शिथिल करने की रणनीति के अंतर्गत दुश्मन ने दम लेकर लड़ना शुरू कर दिया। कई-कई दिन जंग के बिना बीतने लगे, जबकि श्री अनंदपुर साहिब की घेराबन्दी दिनो-दिन बढ़ती गई। अनाज के ज़ख़ीरे ख़त्म होने लगे। पशुओं के लिए चारा ख़त्म होने लगा। घोड़े-हाथी भूख से मरने लगे।

भले ही सिंघ शूरवीर रात के समय दुश्मन फौज पर अचानक हमला कर अनाज व पशु-चारा काफ़ी मात्रा में छीन लाते, मगर इस कार्रवाई में बड़ा जानी नुकसान भी हो रहा था। लगातार शहादतों के कारण सिंघ शूरवीरों की संख्या दिनो-दिन कम हो रही थी। आश्विन महीने के अंत तक श्री अनंदपुर साहिब में लगभग दो हज़ार सिंघ शूरवीर ही बचे थे। इनमें से माझा क्षेत्र से सम्बन्धित चालीस सिंघों के शरीर जब भूख-प्यास और लगातार जंग करने के कारण निढाल व कमज़ोर पड़ गए तो उनके मज़बूत मन और इरादे भी समय के चक्र के साथ डगमगा गए। कमज़ोर मन में श्री अनंदपुर साहिब अर्थात् सतिगुरु को छोड़ने का ख़्याल भारू हो गया, परन्तु इसे एकदम उनकी रूह की स्वीकृति न मिली। कई दिनों तक सभी दुविधा में पड़े रहे। तत्पश्चात् कोई पेश चलती न देख आखिरकार इकठ्ठा होकर सतिगुरु के सम्मुख आए और गले में पल्ला डाल कर, सिर झुका कर खड़े हो गए। किसी में कुछ बोलने की हिम्मत नहीं थी। अंतर्यामी सतिगुरु ने कुछ पल प्रतीक्षा करने के बाद इस प्रकार इकठ्ठा होकर आने का कारण पूछा तो अगुआ सिक्ख भाई महां सिंघ ने विनय की— "सच्चे पातशाह जी! हम लौट जाना चाहते हैं! हमसे अब और लड़ा नहीं जाता!"

अपने नादी पुत्रों (ख़ालसा) को अपने बिन्दी पुत्रों (चार साहिबज़ादों) से भी ज्यादा प्रेम करने वाले सतिगुरु के लिए यह पल बड़े वैराग्यमयी थे। कलगियां वाले पातशाह ने बड़े रहम के साथ, भूख के हाथों हारे, अपने प्यारे भुलक्कड़ सिंघों की तरफ देखा, तत्पश्चात् कुछ समय ख़ामोश रहने के बाद भरे मन से किसी दैवी उदासी में वचन किया— "बेशक चले जाओ, मगर जाते-जाते गुरु-मुरीद का प्रेम-नाता तोड़ने की याद या निशानी के तौर पर एक 'बेदावा' (सम्बंध-विच्छेद पत्र) लिख कर हमें दे जाओ!" प्रेम के अटूट बंधन की ऊँची समझ और इसके दावे, अधिकार, अपनापन के भाव से लबरेज़ सतिगुरु के ये अति गहरे और भावपूर्ण वचन ज्यों ही भाई महां सिंघ के कानों में पड़े, उसका सारा शरीर प्रचंड प्रेम-भावना से, थरथरा उठा, वैराग्य में आई रूह कराह उठी। विस्मित भाई महां सिंघ ने सजल नेत्रों से रोते-गिड़गिड़ाते हुए पूछा— "बेदावा! सच्चे पातशाह

यह क्या कह रहे हो?" हजूर पातशाह ने पिता की भाँति भाई महां सिंघ की पीठ पर हाथ फेरा। फिर अपनेपन और अधिकार-भाव के साथ वचन किया— "प्यारे ख़ालसा जी! हमारा कहना है कि आप सब सहर्ष चले जाओ, लेकिन जाने से पहले हमारे साथ मुकद्दस प्रेम-सम्बन्ध को तोड़ने के दावे को त्यागने के चिह्न या सबूत के तौर पर हमें एक कागज़ पर यह लिख कर व दस्तख़त कर दे जाओ कि आज से आप हमारे (गुरु) नहीं और हम आपके (सिक्ख) नहीं!"

सतिगुरु के उपरोक्त वैराग्मयी तथा रहस्यमयी वचन सुन कर भाई महां सिंघ और उसके ३९ मझैल साथी दिलगीरी व बेगानेपन की अवस्था में कुछ समय विचारों में डूबे रहे, उपरांत पता नहीं परमात्मा के कौन-से हुक्म में भाई महां सिंघ ने हौसला कर कागज़ पर वो लफ़्ज़ लिखे। फिर सभी ने बारी-बारी से भरे मन और काँपते हुए हाथों से उस पर अपने दस्तख़त किये और हजूर को देकर चुपचाप श्री अनंदपुर साहिब से विदा हो गए। माझा क्षेत्र के चालीस सिंघों द्वारा 'बेदावा' देकर चले जाने की घटना, मुरीद-प्रेम में सिक्त, अति संवेदनशील सतिगुरु के लिए, निस्संदेह एक असह्य सदमे की तरह था, मगर क्षमाशील पातशाह ने इसे ईश्वरीय रज़ा जानते हुए स्वीकार कर लिया।

दूसरी तरफ़ गुरु के मुरीदों के लिए यह घटना तुलनात्मिक स्तर पर नाख़ुशगवार और कष्टदायक थी। सतिगुरु की जुदाई ने उनके हृदय को गहरा आघात पहुंचाया। वे सिंघ जब अपने घर पहुँचे तो सारा घटनाक्रम पता चलने पर घर के किसी जीव ने भी उनके किए को अच्छा न जाना। सबने कहा कि आप लोगों ने अच्छा नहीं किया। खासकर महिलाओं के तानों ने उनके मन में अपराध-भाव, आत्मग्लानि और पश्चाताप का ऐसा तीव्र शोर मचाया कि उनके पहले से ही उदास और दुखी मन गुरु-वियोग में कराह उठे, तड़प उठे। सभी जन फफक-फफक कर रोने लगे।

जैसे-जैसे श्री अनंदपुर साहिब के उजाड़े, परिवार-बिछोड़े, चारों साहिबज़ादों तथा माता गुजरी जी सहित सिंघों की शहादत, माछीवाड़ा के जंगलों में कलगियां वाले प्रियतम की वैराग्मयी अवस्था आदि के दुखदायी समाचार इन सिंघों के कानों में सुनाई दिए, वियोग और पश्चाताप का भाव और प्रचंड होता गया। समय के वेग के साथ धीरे-धीरे वियोग की प्रचंड अग्नि ने सतिगुरु के प्रति उनके प्रेम तथा वैराग्य को गहरा निखार प्रदान किया और बेमुख होने के गुनाह के शिद्दती एहसास एवं पश्चाताप की निर्मल अश्रु-धारा से पुन: तरोताज़ा व उज्जवल हुए उनके हृदय में सतिगुरु से मिलने की उत्कंठा ज़ोर पकड़ने लगी।

सिक्खों की अंतरात्मा में घटित शुद्धीकरण, प्रफुल्लता और इंकलाब वाले इस बेहद सृजनात्मक माहौल में सतिगुरु के प्यार में रंगी एक बहादुर सिक्ख स्त्री माता भाग कौर की कुशल चेतना और प्रभावशाली प्रेरणा ने, सोने पर सुहागे वाला कार्य किया। उसने एक प्रकार से माझा क्षेत्र के सिक्खों

की अपने सतिगुरु से टूटी लगन को पुन: जोड़ने के अलावा, उन्हें सतिगुरु की अपार बख़शीश अर्थात् मुक्ति की रहमत के हकदार बनाने का रास्ता भी सपाट किया। फलस्वरूप चालीस सिंघों ने हुई भूल की क्षमा-याचना हेतु सतिगुरु से मिलने और साथ ही ज़ालिम मुग़ल हुकूमत के विरुद्ध चल रहे संघर्ष में, उनका मरते दम तक साथ देने का दृढ़ फ़ैसला किया। उन्हें ख़बर मिली कि कलगियां वाले प्रियतम इन दिनों मालवा के इलाके में दीना नामक गाँव में ठहरे हुए हैं और मुग़ल फ़ौज उनके पीछे लगी हुई है। किसी समय भी मुगल फ़ौज के साथ उनका मुकाबला हो सकता है। चालीस सिंघों के शस्त्रबद्ध जत्थे ने माता भाग कौर तथा भाई महां सिंघ के नेतृत्व में तैयार होकर अरदास की और माझा-क्षेत्र से दीना नामक गाँव की तरफ कूच कर दिया।

उधर 'फ़तह' की महान ऐतिहासिक चिट्ठी 'ज़फ़रनामा' के रचना-स्थान गाँव दीना में चौधरी शमीर के पास अपने तकरीबन सवा महीने के निवास के आख़िरी दिनों में सतिगुरु को अपने स्रोतों से पता चला कि सरहिंद के अत्याचारी सूबेदार वजीर ख़ान को उनके दीना गाँव में ठहरे होने की ख़बर मिल गई है और वो उन्हें हाथों-हाथ गिरफ़्तार करने के उद्देश्य से पाँच हज़ार के करीब घुड़सवार फ़ौज लेकर दीना गाँव की तरफ बढ़ा आ रहा है।

जंग की अनोखी मर्यादा की पालना को महत्ता प्रदान करने वाले और युद्ध-नीति के माहिर सतिगुरु ने आबादी वाले क्षेत्र में जंग करना उचित न समझा। जंग के लिए मालवा क्षेत्र के मारुस्थल बियाबान में किसी खुली और उपयुक्त जगह की तलाश के मकसद को मुख्य रखते हुए उन्होंने दीना गाँव छोड़ने का फ़ैसला कर लिया। दीना से चलते समय नीले पहरावे में सुसज्जित और हथियारबद्ध होकर घोड़े पर सवार कलगियां वाले प्रियतम के साथ भाई मान सिंघ तथा जान पर खेल जाने वाले बहुत-से नये सजे अमृतधारी सिंघ शूरवीर भी घोड़ों पर सवार थे। इसके अलावा तनख़्वाह पर भरती किये बहुत-से जवान तोड़ेदार बंदूकों, शस्त्रों सहित, गुरु जी के हमसफ़र थे। जलाल, भगता आदि गाँवों से गुज़रने के बाद गुरु जी कोटकपूरा की धरती पर जा पहुँचे। इसी दौरान दूसरी तरफ़ चालीस मझैल सिंघों और झबाल निवासी माता भाग कौर जी का जत्था जब दीना नामक गाँव में पहुंचा तो सतिगुरु वहाँ से निकल चुके थे। सतिगुरु के दीदार की तीव्र लालसा को हृदय में बसा, वे सतिगुरु के पद-चिन्हों को पहचानते हुए उनके पीछे-पीछे चलते गए।

उधर सच्चे पातशाह का काफ़िला कोटकपूरा से आगे ढिल्लवां कलाँ, जैतो, सुनीअर तथा रामेआणा होता हुआ 'खिदराणे की ढाब' (जोहड़) की तरफ बढ़ चला। रामेआणा से प्रस्थान-समय तक सतिगुरु की फ़ौज में अंदाज़न सौ से अधिक उच्च आचरण वाले सिंघ (संत-सिपाही) जुड़ चुके थे। इस तरह कुल मिला कर तेग़ों, तीर-कमानों और बंदूकों से सुसज्जित पाँच हज़ार श्रद्धावान

सिंघ शूरवीरों की घुड़सवार फ़ौज सतिगुरु की छत्र-छाया में मौजूद थी। रामेआणा से चल कर जब सतिगुरु का जत्था 'खिदराणे की ढाब' नामक स्थान पर पहुँचा तो जंगी नज़रिए से मुगलों को करारी टक्कर देने हेतु, सतिगुरु को यह जगह उचित लगी। इतने में सतिगुरु को अपने ख़ुफ़िया-तंत्र से यह ख़बर मिली कि वज़ीर ख़ान का फ़ौजी काफिला दो-चार कोस की दूरी पर उनका पीछा करता आ रहा है। मौका संभालते ही गुरु जी ने तुरंत ढाब (जोहड़) और उसके आस-पास के सभी स्थानों का ध्यानपूर्वक जायज़ा लिया। तत्पश्चात् इस जगह के अगले छोर पर कुछ दूरी पर स्थित टिब्बी (पहाड़ी) पर जा डेरा लगाया। (यह वो पवित्र ऐतिहासिक स्थान है जहाँ आजकल गुरुद्वारा टिब्बी साहिब सुस्थित है।) दुश्मनों को करारे हाथ दिखाने की पूरी मोर्चाबंदी और योजनाबंदी की गई, जिसके अंतर्गत सिंघों के अलग-अलग जत्थे ढाब के साथ लगती छोटी-छोटी पहाड़ियों और मिट्टी की ढेरियों पर खड़ी झाड़ियों के पीछे छिप कर, दुश्मन के आने के इन्तज़ार में, घात लगा कर बैठ गए। सारी तैयारी के बाद, टिब्बी पर तसल्ली के साथ विराजमान सतिगुरु ने ध्यान से देखा कि इस जगह से ढाब का पूरा इलाका उनके तीरों की मार तले है।

इतने में सतिगुरु के प्रेम-बंधन में बंधा चालीस सिंघों तथा माता भाग कौर का शस्त्रबद्ध जत्था भी सतिगुरु के काफ़िले के पीछे-पीछे वहाँ आ पहुंचा। सतिगुरु द्वारा की गई मोर्चाबंदी देखकर उन्हें यह समझते देर न लगी कि वज़ीर ख़ान की फौज का मुकाबला करने और रण-क्षेत्र में मर-मिटने का उपयुक्त समय अब बिल्कुल निकट आ पहुँचा है। गुरु के प्यारे चालीस योद्धाओं ने बिजली की फुर्ती के साथ ढाब की पूरबी दिशा में सूखे तालाब के एक छोर, जिस तरफ से वज़ीर ख़ान की फौज के हमलावर होकर आने की पूरी-पूरी संभावना थी, को अपनी रण-भूमि बनाने का फ़ैसला किया। सूखे तालाब के इस लंबे छोर (यह वो पवित्र ऐतिहासिक स्थान है, जहाँ आजकल गुरुद्वारा तंबू साहिब सुशोभित है)[२] पर कतारनुमा अनेक झाड़ियां थीं। सिंघों ने बड़ी समझदारी के साथ इन पर अपनी चादरें, कुर्ते, कछहिरे तथा अन्य वस्त्र तान दिए। ऐसा करने के पीछे उनका उद्देश्य यह था कि शत्रु-दल इस जगह को गुरु जी के तंबू (निवास-स्थान) समझे और यकीनन सीधा इधर ही आए, प्यारे सतिगुरु की तरफ न जाये। अगर जाये भी तो उनकी लाशों पर से गुज़र कर जाये। दरअसल, काठ में अग्नि और पुष्प में सुगंध की भाँति, उनके इस विशुद्ध मकसद में, गुरु के प्रति बेमिसाल समर्पण और कुर्बानी का जज़्बा भरा हुआ था। योजना के अधीन वे बंदूकों आदि से पूरी तरह लैस होकर, झाड़ियों की आड़ में घात लगा कर बैठ गए और फिर दुश्मन फ़ौज के आने की प्रतीक्षा करने लगे।

सतिगुरु के ठिकाने की खोज करती मुगल फौज छुट्टा चली आ रही थी। जैसे ही वह मझैल सिंघों के छिपे होने वाली जगह के निकट पहुँची तो

उसने उस जगह को सतिगुरु का पड़ाव जानते हुए, उन्हें हाथों-हाथ पकड़ लेने के इरादे से धावा बोल दिया। मौका पाते ही घात लगा कर बैठे 'बेदावे' वाले चालीस सिंखों, माता भाग कौर तथा उनके जत्थे में शामिल कुछ अन्य शूरवीर दुश्मन फौज पर टूट पड़े। मुगल फौज के हताहत होने से उसमें खलबली मच गई।

दूर ऊँची पहाड़ी पर बैठ कर सारा जंगी नज़ारा ताक रहे गुरु पातशाह जी को यह जानने में देर न लगी कि श्री अनंदपुर साहिब में उन्हें छोड़ कर चले गए ४० सिंघ आज दोबारा जान हथेली पर रखकर, मैदान-ए-जंग में अपनी शूरवीरता भरे कृत्यों द्वारा अपना जीवन-ध्येय सफल करने आ पहुँचे हैं। माथे पर लगे बेमुखताई के धब्बे को मिटाने हेतु आज वे कुछ भी कर गुज़रने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। नादी पुत्रों अर्थात् अपने प्यारे ख़ालसा का प्रचंड समर्पण-भाव, दृढ़ निश्चय और कुर्बानी का जज़्बा देख सतिगुरु जी और जोश में आ गए। मुरीद-प्रेम के अनोखे रंग में रंगे गुरु जी ने टिब्बी पर खड़े होकर अपने तीर-कमान से दुश्मन फौज पर तीरों की ऐसी वर्षा की कि देखते ही देखते मुगल फौज के अनेक सीने लहू-लुहान हो गए।

सतिगुरु द्वारा बरसाए तीरों की बारिश की टंकार से ऐसे लगा जैसे वे अपने बिछड़े मुरीदों की उन्हें पुन: मिलने की प्रबल इच्छा, पुकार (गोलियों की आवाज़) को अपने तीरों की टंकार कर द्वारा, अनोखे अंदाज़ में प्रवान-प्रवान कह कर स्वीकृति दे रहे हों। ऊपर से दोपहर का समय हो रहा था। मझैल सिंघों की बंदूकों की गोलियाँ बेशक ख़त्म हो चुकी थीं मगर वे जान गए थे कि बंदूकों के बाद अब तेग़ का जलवा दिखाने का समय आ गया है। गुरु-प्रीति और धर्म-युद्ध की अनोखी उमंग में मज़बूर चालीस पराक्रमी सिंघ शमशीर लेकर प्रच्छन्न स्थानों से निकल कर खुले मैदान में आ प्रकट हुए। तत्पश्चात् चक्रवात की भाँति शत्रु-दल पर तब तक तेग चलाई, जब तक वे सभी शहीद या घायल होकर धरती पर न गिर गए।

चालीक सिंघों की शक्तिशाली दीवार के ढहढेरी हो जाने के बाद, जब मुग़ल लश्कर ने बेदिली की हालत में सावधानी के साथ धीरे-धीरे आगे बढ़ने का यत्न किया तो बिलकुल उसी वक्त टिब्बी के निकट स्थित कई छोटी-छोटी पहाड़ियों के पार से बंदूकों की गोलियां तीव्र आवाज में गूंजी। दोबारा अचानक हुए बड़े जानी नुकसान और गोलियों की ज़ोरदार आवाज़ ने मुगल फौज का दिल दहला दिया। सूबेदार ने मौत के मुँह में जाने की बजाय, खड़े पाँव अपनी फौज को पीछे हटा लिया और चौधरी कपूरा के साथ परामर्श करने लगा कि अब क्या किया जाये। कपूरा ने बताया कि सिंघों के अधिकार वाली ढाब के अलावा इस जंगल में दूर-दूर तक कहीं पर पानी नहीं है। अगर मुगल फौज ने और जंग की तो संभावना यह भी है कि कहीं उसका सारा लश्कर प्यास के मारे तड़प-तड़प कर ही न मर जाये। बड़े जानी नुकसान के कारण वजीर ख़ान पहले ही

दहला हुआ था, वो अब और दहल गया। वह उसी समय फ़ौज लेकर पीछे लौट गया। लौटता हुआ वो मृत सिपाहियों की लाशें दफन करने की ज़िम्मेदारी चौधरी कपूरा को सौंप गया।

मुगल फ़ौज के हरण हो जाने के बाद गुरु जी सिक्खों सहित उस जगह पर पहुँचे, जहाँ चालीस सिंघों ने मोर्चे लगा कर दुश्मन फ़ौज का राह रोका था और पहले ज़बरदस्त गोलाबारी की थी तथा बाद में तेग़ के कौशल दिखाए थे। सतिगुरु ने देखा कि वे सब के सब, शमां की लौ पर भंवरे के मर मिटने की भाँति, शहीद या घायल होकर ज़मीन पर पड़े थे। इन प्यारे मुरीदों द्वारा सौंपा गया 'बेदावे' वाला कागज़ सच्चे पातशाह ने अभी तक पूरी तरह से संभाला हुआ था और वे बड़ी देर से इस दिन (पुनर्मिलन) के इंतज़ार में थे। प्रेमा-भक्ति की अपनी अनोखी हृदयगत व्याकरण होती है। जुदाई, इन्तज़ार और मिलन की बेला के दृश्य सचमुच ही बड़े अनोखे एवं यादगारी होते हैं। यही कारण है कि जहाँ चालीस सिंघों की सतिगुरु से जुदाई की घटना और जुदाई के समय की समूची मन:वस्था अत्यधिक मार्मिक और दिल को छू लेने वाली थी, वहाँ खिदराणे की जंग में शहादत के माध्यम से सतिगुरु के साथ हुए इनके पुनर्मिलन का वृत्तांत इससे भी कहीं अधिक प्रभावशाली, गौरवशाली, विस्मयजनक तथा दिल में आह उत्पन्न करने वाला था।

सतिगुरु जी बारी-बारी से सभी शहीद सिंघों के पास गए। प्रेम से सराबोर गुरु जी ने कुछेक के हाथों को अपने माथे के साथ छुहाया, अपने रुमाल से कुछ के मुखड़े साफ़ किये, कइयों को गोद में लिया, माँ की भाँति दुलारा और कइयों का माथा चूमा। धरती ने पहली बार हजूर की आँखों में इतने वैराग्मयी आँसू देखे थे। एक पक्ष से सतिगुरु के जीवन का यह आख़िरी धर्म-युद्ध था, जो २१ बैसाख, संवत् १७६२ बिक्रमी को लड़ा गया था, सचमुच अद्भुत जज़्बाती और आश्चर्यजनक था। प्रेम-भावना में डूबे गुरु जी ने अपने प्यारे मुरीदों (शहीदों) को, किसी को अपना 'पाँच हज़ारी सिक्ख' और किसी को अपना 'दस हज़ारी सिक्ख' कह कर नवाजा। इन चालीस वीरों में से एक अभी जिंदा था, मगर घायल था। गुरु जी उसके पास गए। सतिगुरु के पवित्र कदमों की आहट सुन कर भाई महां सिंघ नामक उस सिंघ ने आँखें खोलीं। उसने देख लिया कि उनके निकट कौन है। उसे पता था कि पातशाह अवश्य आएंगे। मानों वो अकेला नहीं सिसक रहा था, इन्तज़ार कर रहा था, अलबत्ता उसके माध्यम से सभी के सभी चालीस सिंघ सामूहिक स्तर पर सिसक रहे थे, गुरु का इन्तज़ार कर रहे थे; मानों शेष सभी (३९) शहीद सिंघों की आत्मा, उनके अगुआ भाई महां सिंघ की आत्मा के माध्यम से साँस ले रही थी, सतिगुरु के आने का बेताबी के साथ इन्तज़ार कर रही थी।

कुछ पल कृपा भरी नज़र के साथ देखने के बाद चोजी पातशाह भाई महां सिंघ के पास बैठ गए। सिसकते हुए भाई महां सिंघ के सिर को जब

उन्होंने अपनी गोद में लिया तो उनके नेत्रों में पुनर्मिलन के आंसू थे। गुरु जी के कर्म का कोई शुमार न रहा। कृपालु सतिगुरु ने ईश्वरीय विह्वलता में वचन किया— "प्यारे महां सिंघ! कुछ माँग लो! आज जो मांगोगे, मिलेगा!" परोपकारी मुरीद भाई महां सिंघ बोला, "हजूर! 'बेदावा' फाड़ दो!" कृपालु सतिगुरु ने फिर वचन किया— "कुछ और माँग लो!" "बस, 'बेदावा' फाड़ दो!" भाई महां सिंघ ने आस्था भरी आवाज़ में कहा। गुरु जी ने उसी समय अपने पास संभाला 'बेदावा' निकाला, भाई महां सिंघ को दिखाया और उसे फाड़ कर हवा में उड़ा दिया। सिसकते हुए भाई महां सिंघ ने संतोष व्यक्त करते हुए दोनों हाथ जोड़ कर शुक्राना किया और इसके बाद अपने मेहरबान व क्षमाशील सतिगुरु की गोद में सदा के लिए सो गया। कृपालु, दयालु सतिगुरु ने भाई महां सिंघ सहित सभी चालीस शहीद सिंघों को 'मुक्ते' (मुक्त) पदवी प्रदान कर, 'खिदराणे की ढाब' का नाम 'मुक्ति का सर' अर्थात् 'मुक्तसर' रखा। इस महान ऐतिहासिक स्थान पर आजकल एक विशाल अमृत सरोवर और इसके किनारे गुरुद्वारा टुट्टी गंढी साहिब सुस्थित है।

ज्यों ही भाई महां सिंघ ने श्वास त्यागे, शस्त्रधारी ख़ालसाई भेस वाली एक घायल बहादुर स्त्री ने सतिगुरु के चरणों पर आ शीश झुकाया। माता भाग कौर थी, माझा क्षेत्र की वीरांगना सिंघनी, जो इन चालीस सिंघों को यहां पर लेकर आई थी, उसने गुरु जी से बिछड़े इन 'मुकतों' की बिछोड़े की बैराग्यमयी गाथा गुरु जी को शुरू से लेकर अंत तक सुनाई। इन प्यारे मुकतों का दाह संस्कार सतिगुरु ने अपने हाथों से किया। जहाँ पर दाह-संस्कार किया गया, उस पवित्र ऐतिहासिक स्थान पर आजकल गुरुद्वारा शहीदगंज साहिब स्थापित है।[३]

इस सब अनोखे ऐतिहासिक वृत्तांत का सार-तत्व यह है कि माझा क्षेत्र के चालीस सिंघों द्वारा अपने गुरु के प्रति प्रेम का दावा या हक छोड़ने का प्रतीक, सबूत या गवाह बना 'बेदावा' निस्संदेह प्रेम के बंधन में बंधे दोनों पक्षों (पीर और मुरीद) के लिए नाख़ुशगवार और दुखदायी होने के अलावा अहम, सूक्ष्म, भावपूर्ण एवं कीमती दस्तावेज़ था।

संदर्भिका :

१. प्रो. साहिब सिंघ, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर साहिब, १९७८ ई. चौथी बार, पृष्ठ १५९ और १६८

२. प्रो. करतार सिंघ, सिक्ख इतिहास भाग– १, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, २००३, सातवीं बार, पृष्ठ ४४३

३. उक्त, पृष्ठ ४४५

बाबा बंदा सिंघ बहादुर का युद्ध-अभियान

–स. परमजीत सिंघ 'सुचिंतन'*

प्रस्तावना : भारतीय इतिहास में कुछ ऐसे व्यक्तित्व हुए हैं, जिन्होंने केवल युद्ध ही नहीं लड़े बल्कि समाज की संरचना को बदलने का साहस भी किया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर उन्हीं महान योद्धाओं में से एक थे, जिनका युद्ध-अभियान (१७०९-१७१६) केवल मुगल सत्ता के विरुद्ध विद्रोह नहीं था बल्कि यह एक जालिम शासन के खिलाफ सामाजिक क्रांति की शुरूआत थी। उन्होंने पहली बार भारत में किसानों और निम्न वर्ग के लोगों को सत्ता में भागीदारी दी, जमींदारी-व्यवस्था को चुनौती दी और न्याय पर आधारित शासन स्थापित किया। यह लेख उनके युद्ध-अभियान के विभिन्न चरणों, प्रमुख युद्धों, प्रशासनिक सुधारों तथा ऐतिहासिक प्रभावों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

प्रारंभिक जीवन और परिवर्तन : बाबा बंदा सिंघ बहादुर का जन्म सन् १६७० में जम्मू-कश्मीर के राजौरी क्षेत्र में हुआ। उनका बचपन का नाम लछमन दास था। जब वे युवा अवस्था में थे तो उन्हें शिकार करने का बहुत शौक था, लेकिन एक घटना ने उनके जीवन की दिशा बदल दी। शिकार करते समय, अनजाने में उनसे एक गर्भवती हिरणी की हुई हत्या ने उन्हें वैराग्य की ओर प्रेरित कर दिया। इसके बाद वे माधो दास बैरागी के रूप में तपस्वी जीवन जीने लगे। उनका जीवन निर्णायक रूप से तब बदला, जब उनकी भेंट सन् १७०८ ई. में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ नांदेड़ में हुई। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उन्हें खालसा पंथ की सेवा, न्याय की स्थापना और मुगल शासकों के अत्याचारों के विरुद्ध संघर्ष का आदेश दिया। गुरु जी ने उन्हें 'बाबा बंदा सिंघ बहादुर' नाम दिया और पंजाब में अभियान के लिए भेजा।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : १७वीं–१८वीं शताब्दी का भारत मुगल शासन के अधीन था। औरंगज़ेब की मृत्यु (१७०७ ई.) के बाद मुगल साम्राज्य कमजोर हो चुका था, लेकिन मुगल शासकों के अत्याचार जारी थे। विशेष रूप से पंजाब में किसानों पर भारी कर लगाए जाते थे, धार्मिक उत्पीड़न बढ़ रहा था, सिक्खों पर विशेष कर अत्याचार हो रहे थे। सरहिंद के सूबेदार वज़ीर खान ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के छोटे साहिबजादों को दीवार में चिनवाकर शहीद कर दिया था। इस अन्याय का बदला लेना और जनता को मुगल शासकों से मुक्त करवाना ही बाबा बंदा सिंघ बहादुर के युद्ध-अभियान का मुख्य उद्देश्य बन गया था।

* ७६, फेस-३, अर्बन अस्टेट, दुग्गरी, लुधियाना– १४१०१३, फोन : ९७७९१-२४५००

युद्ध-अभियान की शुरूआत : सन् १७०९ ई. में बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने पंजाब में अपना युद्ध-अभियान शुरू किया। उनकी सेना में किसान, मजदूर व तथाकथित निम्न वर्ग के लोग, खालसा सेना के रूप में शामिल थे। यह सेना पारम्परिक सेना नहीं थी लेकिन इसमें अद्भुत जोश और धार्मिक प्रेरणा कूट-कूट कर भरी थी।

समाणा का युद्ध (१७०९ ई.) : बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने मुगल सेना के साथ बहुत-से युद्ध लड़े और उन्हें कड़ी शिकस्त दी। समाणा का युद्ध बाबा बंदा सिंघ बहादुर की पहली बड़ी विजय थी। समाणा मुगलों का महत्वपूर्ण केंद्र था। यहाँ कई ऐसे मुगल सैन्य अधिकारी रहते थे, जिन्होंने सिक्खों पर अत्याचार किए थे। श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी, उनके तीन सिक्खों (भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी व भाई दिआला जी) तथा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के छोटे साहिबजादों को शहीद करने वाले जल्लाद भी समाणा के ही निवासी थे। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने युद्ध जीत कर इस शहर पर कब्जा कर लिया और मुगल शक्ति को पहला बड़ा झटका दिया। इससे सिक्खों का आत्मविश्वास बढ़ा और यह विजय उनके युद्ध-अभियान की निर्णायक शुरूआत साबित हुई।

कपूरी और साढौरा की विजय : समाणा के बाद बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने कपूरी और साढौरा पर आक्रमण किया। इन क्षेत्रों के शासक बहुत अत्याचारी थे। लोगों को भारी कर और उत्पीड़न सहना पड़ता था। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने इन अत्याचारी शासकों को पराजित किया, जिससे लोगों को राहत की सांस मिली। बाबा बंदा सिंघ बहादुर को स्थानीय लोगों का समर्थन प्राप्त हुआ और बाबा बंदा सिंघ बहादुर की लोकप्रियता तेजी से बढ़ी।

चप्पड़चिड़ी का युद्ध और सरहिंद-फतह (१७१० ई.) : यह युद्ध सरहिंद के पास चप्पड़चिड़ी नामक स्थान पर हुआ। मुगल सेना का नेतृत्व वज़ीर खान कर रहा था। बाबा बंदा सिंघ बहादुर की सेना गिनती में कम थी, परन्तु इसमें साहस बहुत था। परिणामस्वरूप इस युद्ध में वज़ीर खान मारा गया और मुगल सेना पराजित हुई। बाबा बंदा सिंघ बहादुर का सरहिंद पर कब्ज़ा हो गया। इस विजय का अपना एक ऐतिहासिक महत्व है। यह विजय अन्याय पर न्याय की जीत के रूप में देखी जाती है। इस विजय को सिक्ख इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक माना जाता है।

प्रशासनिक सुधार और शासन-व्यवस्था : बाबा बंदा सिंघ बहादुर केवल योद्धा ही नहीं बल्कि दूरदर्शी शासक भी थे। उन्होंने अपने जीवन-काल में बहुत-से सुधारों पर बल दिया, जिनमें से प्रमुख सुधार निम्नलिखित हैं :—

जमींदारी-प्रथा का अंत : जमींदारों से जमीन लेकर साधारण किसानों को दी गई।

सामाजिक समानता : जाति-व्यवस्था को चुनौती दी व निम्न वर्ग के लोगों को सम्मान दिया।

न्याय-व्यवस्था : भ्रष्टाचार पर रोक लगाकर, निष्पक्ष न्याय को सुनिश्चित किया।

इन सुधारों ने उन्हें लोगों का लोकप्रिय व सच्चा

नेता बना दिया।

मुगलों के साथ संघर्ष : बाबा बंदा सिंघ बहादुर की बढ़ती शक्ति से मुगल शासक चिंतित हो गए। मुगल बादशाह बहादुर शाह (प्रथम) ने उनके खिलाफ अभियान चलाया। कई बार संघर्ष हुए। सिक्खों को जंगलों और पहाड़ियों में जाना पड़ा। सिक्खों ने इस सैन्य-युद्ध के दौरान, गुरिल्ला युद्ध-रणनीति अपनाई, ताकि सिक्ख फौज का कम से कम नुकसान हो।

लोहगढ़ का किला : बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने लोहगढ़ को अपनी राजधानी बनाया। यह प्राकृतिक रूप से सुरक्षित होने के साथ-साथ रणनीतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण था। मुगलों ने कई बार इस किले पर हमला किया लेकिन बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने हर बार उन्हें कड़ी टक्कर दी।

गुरदास नंगल की घेराबंदी (१७१५ ई.) : यह बाबा बंदा सिंघ बहादुर के युद्ध-अभियान का अंतिम चरण था। मुगल सेना ने गुरदास नंगल की गढ़ी (अहाता) में उनकी घेराबंदी की, जो कि लगभग आठ महीने तक चली। भोजन और संसाधनों की कमी हो जाने से सैनिकों की हालत कमजोर हो गई। अंततः सन् १७१५ ई. में बाबा बंदा सिंघ बहादुर को गिरफ्तार कर लिया गया।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत (१७१६ ई.) : बाबा बंदा सिंघ बहादुर को कैद कर दिल्ली लाया गया। उनके साथियों को भी कैद कर लिया गया। उन्हें धर्म-परिवर्तन के लिए मजबूर किया गया, लेकिन उन्होंने अपने सिद्धांतों के साथ समझौता नहीं किया। अन्त में सन् १७१६ ई. में उन्हें शहीद कर दिया गया। उनकी शहादत अद्वितीय साहस और दृढ़ता का उदाहरण है।

युद्ध-अभियान का ऐतिहासिक महत्व : बाबा बंदा सिंघ बहादुर का युद्ध-अभियान अपना एक ऐतिहासिक महत्व रखता है। बाबा बंदा सिंघ बहादुर के नेतृत्व में पहली बार सिक्ख राज्य की स्थापना हुई। मुगल सत्ता को चुनौती देकर, उन्होंने क्रूर व अत्याचारी साम्राज्य की नींव हिला दी। उनके द्वारा किए गए संघर्ष ने, आगे चलकर महाराजा रणजीत सिंघ के सिक्ख साम्राज्य का आधार तैयार किया। उनके राज्य-काल में दबे-कुचले गरीब लोगों को एवं वंचितों को समान अधिकार मिले, जिससे समाज में क्रांति आई और एक नई ऊर्जा का संचार हुआ।

निष्कर्ष : बाबा बंदा सिंघ बहादुर का युद्ध-अभियान, भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। उन्होंने केवल रणक्षेत्र में ही लड़ाई नहीं लड़ी, बल्कि अपने युद्ध-अभियान में न्याय, समानता और धर्म के सिद्धांतों को भी प्रमुख स्थान प्रदान किया। उनका जीवन हमें आज भी प्रेरणा देता है कि हम अन्याय के खिलाफ खड़े होकर, समाज में समानता स्थापित करें और अपने सिद्धांतों पर अडिग रहें। बाबा बंदा सिंघ बहादुर का जीवन यह सिद्ध करता है कि धर्म-सिद्धांतों एवं धर्म-विश्वासों में दृढ़-संकल्पित एक व्यक्ति भी समाज की दिशा बदल कर, नया इतिहास सृजित कर सकता है।

सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया

*–डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

अठारहवीं शताब्दी के सिक्ख अपनी अनुपम वीरता, आदर्श आचरण एवं पवित्र विचारधारा के कारण सिक्ख इतिहास के सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व माने जाते हैं। इस दौर के महान सिक्ख योद्धाओं में एक बड़ा ही महत्वपूर्ण नाम सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया का है। आपके कुशल नेतृत्व एवं सेनानायकत्व में सिक्ख-शक्ति पंजाब तथा उत्तर भारत में और मज़बूत होकर उभरी। आहलूवालिया मिसल की स्थापना कर आपने सिक्ख-शक्ति को दृढ़ स्थायित्व प्रदान किया।

जन्म एवं बाल्यावस्था : सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया का जन्म 'पंजाब कोश' के अनुसार ३ मई, सन् १७१८ ईसवी को जिला लाहौर के गाँव आहलू में हुआ। आपके पिता का नाम सरदार बदर सिंघ था, जो सरदार कपूर सिंघ फैजलपुरिया के साथी थे। आहलू गाँव लाहौर से पाँच कोस या आठ किलोमीटर की दूरी पर था। इस गाँव को सरदार बदर सिंघ के परदादा सरदार साधू सिंघ (सद्दा सिंघ) ने बसाया था।

सन् १७२३ ईसवी में, जब आप अभी मात्र पाँच वर्ष के ही थे, आपके पिता सरदार बदर सिंघ का देहांत हो गया। ऐसे में माँ और पुत्र अकेले रह गये। सरदार जस्सा सिंघ का पालन-पोषण माता की देख-रेख में होने लगा।

पिता के देहांत के बाद सरदार जस्सा सिंघ को कुछ दिन संघर्षों में बिताने पड़े, परन्तु माँ आपको निरंतर गुरबाणी पठन-अध्ययन में रत रखतीं। उन्हीं दिनों 'दल खालसा' श्री अमृतसर साहिब में एकत्र हुआ। माँ सरदार जस्सा सिंघ को साथ लेकर सिंघों के दर्शन करने वहाँ आई। माँ-पुत्र का गुरबाणी-प्रेम देखकर नवाब कपूर सिंघ फैजलपुरिया अत्यंत प्रभावित हुए। उन्होंने सरदार जस्सा सिंघ को अमृत छका कर 'सिंघ' सजा दिया।

माता सुंदरी जी के आश्रय में : दशमेश पिता के सुपत्नी माता सुंदरी जी उन दिनों दिल्ली में थे। सरदार जस्सा सिंघ को उनकी माँ अपने साथ लेकर माता सुंदरी जी के पास आ गई और उनके आश्रय में रहने लगी। होनहार सरदार जस्सा सिंघ पर माता सुंदरी जी का विशेष स्नेह हो गया। इस प्रकार सरदार जस्सा सिंघ को वहाँ पर उच्च स्तर की शिक्षा-दीक्षा मिलने लगी। सरदार जस्सा सिंघ ने यहीं पर युद्ध-कला तथा शस्त्र-संचालन सीखा।

सरदार जस्सा सिंघ एवं उनकी माँ लगभग दस वर्ष तक माता सुंदरी जी के आश्रय में रहे। माता सुंदरी जी ने सरदार जस्सा सिंघ को आशीर्वाद दिया और एक 'गुर्ज' प्रदान की।

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना–१४११०१, फोन : ६२३९६-०१६४१*

नवाब कपूर सिंघ के संरक्षण में : सन् १७४३ ईसवी में सरदार जस्सा सिंघ अपने मामा सरदार भाग सिंघ एवं माँ के साथ पंजाब वापस आ गये। माता सुंदरी जी का आदेश था कि अब सरदार जस्सा सिंघ की जिम्मेदारी नवाब कपूर सिंघ संभालेंगे। जलंधर में युवा सरदार जस्सा सिंघ नवाब कपूर सिंघ से मिले। वे सरदार जस्सा सिंघ को देखकर अत्यंत प्रसन्न हुए। माता सुंदरी जी की आज्ञा के अनुसार उन्होंने सरदार जस्सा सिंघ को अपने संरक्षण में ले लिया। यहां रहकर युवा सरदार जस्सा सिंघ ने बड़े परिश्रम से अपने व्यक्तित्व का विकास किया। गुरबाणी-पाठ, सेवा, शस्त्र-विद्या का अभ्यास उनकी नित्य की क्रिया थी।

नवाब कपूर सिंघ ने उन्हें घोड़ों के दाने-पानी की सेवा पर नियुक्त किया था। मन, वचन और कर्म से श्रेष्ठ आचरण करते हुए ये उत्तम नाम-अभ्यासी एवं शूरवीर योद्धा बन गये।

युवा सरदार जस्सा सिंघ सन् १७४३ से लेकर १७५३ ईसवी तक नवाब कपूर सिंघ की संगत में रहे और उनके साथ अनेक युद्धों एवं जंगी मुहिमों में भाग लिया। इन युद्धों में सन् १७४६ ईसवी में काहनूवान में घटित 'छोटा घल्लूघारा' भी शामिल है। यहाँ सरदार जस्सा सिंघ ने अद्‌भुत वीरता का परिचय दिया।

आहलूवालिया मिसल की जत्थेदारी : सन् १७४८ ई. में जब बैसाखी के अवसर पर श्री अमृतसर साहिब में बुलाये गये 'सरबत्त खालसा' में 'मिसलों' की स्थापना की गई तो सरदार जस्सा सिंघ को 'आहलूवालिया मिसल' का जत्थेदार नियुक्त किया गया। सरदार जस्सा सिंघ के नेतृत्व में आहलूवालिया मिसल ने बड़ी तेज़ी से उन्नति की और यह एक बड़ी शक्ति बनकर उभरी।

सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के आरंभिक युद्ध : सन् १७४७ ईसवी में सरदार जस्सा सिंघ और उनके जत्थे ने श्री अमृतसर साहिब के हाकिम सलाबत खान को मार कर नगर और आस-पास के इलाके पर कब्ज़ा कर लिया। सन् १७४९ ईसवी में मुल्तान के हाकिम शाहनवाज़ को खारिज़ करने के लिए सरदार जस्सा सिंघ ने दीवान कौड़ामल की सहायता की। इसी तरह सन् १७५३ ईसवी में जलंधर के हाकिम अदीना बेग को हराकर फतेहाबाद के परगने पर अधिकार किया।

सिक्खों का नेतृत्व : सन् १७५३ ईसवी में अपने अकाल प्रस्थान के समय नवाब कपूर सिंघ फैजलपुरिया ने सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को सिक्खों का नेतृत्व सौंप दिया। नवाब कपूर सिंघ ने सरदार जस्सा सिंघ को उस समय श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की एक कृपाण दी, जो उन्हें माता सुंदरी जी ने प्रदान की थी। यह कृपाण आज भी कपूरथला रियासत के संग्रहालय में संरक्षित है।

सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के नेतृत्व में सिक्खों ने बहुत बड़ी-बड़ी उपलब्धियाँ प्राप्त की। सन् १७५७ ईसवी में बाबा दीप सिंघ जी ने श्री हरिमंदर साहिब की रक्षा के लिए शहादत दी थी।

बाबा जी के इस अधूरे कार्य को सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने पूरा किया। उन्होंने पहले अब्दाली के पुत्र तैमूर खान तथा सेनापति जहान खान को काबुल तक खदेड़ा और फिर वापस आकर पुन: श्री हरिमंदर साहिब की 'कार सेवा' करवाई।

बंदी स्त्री-पुरुषों को छुड़ाना : अफगान आक्रमणकारी अहमद शाह अब्दाली ने सन् १७४७ ईसवी से लेकर १७६७ ईसवी तक उत्तर-पश्चिम भारत पर पच्चीसों हमले किये। इन हमलों के दौरान अब्दाली बहुत सारा धन लूटकर और हज़ारों स्त्री-पुरुषों को गुलाम बनाकर अपने साथ ले जाया करता था। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के नेतृत्व में सिक्ख निरंतर अब्दाली की सेना पर छापामार युद्ध-शैली में आक्रमण करते और स्त्री-पुरुषों को छुड़ाकर ले जाते। इस प्रकार उन्होंने हज़ारों स्त्री-पुरुषों को मुक्त कराया।

बड़ा घल्लूघारा : सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण युद्ध 'बड़ा घल्लूघारा' (विध्वंस) था। हुआ यूं कि सन् १७६१ ईसवी के आक्रमण के बाद अब्दाली अभी अफगानिस्तान लौटा ही था कि सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने लाहौर पर हमला कर उस पर कब्ज़ा कर लिया। अब्दाली द्वारा नियुक्त सूबेदार लाहौर छोड़कर भाग गया।

जनवरी १७६२ ईसवी में जब अब्दाली को इसकी खबर मिली तो वह बौखला उठा। सिक्खों की छापामार गतिविधियों से वह पहले ही झल्लाया हुआ था। इस बार उसने सिक्खों पर बड़ा हमला कर उन्हें समूल खत्म करने की ठानी। सिक्खों को अब्दाली की योजना की भनक लग गई। उन्होंने अपने परिवार मलेरकोटला के पास एकत्र कर दिये ताकि परिवारों को सुरक्षित कर वे लाहौर वापस जाकर अब्दाली का मुकाबला कर सकें। परंतु, अनुमान के उलट दस दिन के बजाय अब्दाली तीन दिन में ही लाहौर पहुँच गया। उसके सिपहसालार कासिम खान ने आठ फरवरी को मलेरकोटला पहुँच कर सिक्खों तथा उनके परिवारों को घेरे में ले लिया और क़त्लेआम शुरू कर दिया।

सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया तथा अन्य सिक्ख जत्थेदारों के नेतृत्व में सिक्खों ने घमासान युद्ध किया और परिवारों को बचाकर बरनाला की ओर ले जाने का प्रयत्न करने लगे। सिक्ख बरनाला तो पहुँच गये परंतु इस युद्ध में लगभग तीस हजार सिक्ख स्त्री, पुरुष, बच्चे, वृद्ध मारे गये। तकरीबन आधे सिक्ख एक ही दिन में खत्म हो गये। इसीलिए इस दिन को 'बड़ा घल्लूघारा' कहा जाता है।

सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को इस जंग में २२ ज़ख्म लगे। इतनी विकट परिस्थितियों में भी आपने हिम्मत नहीं हारी। स्वयं भी स्वस्थ हुए और छिन्न-भिन्न हो चुके सिक्खों को पुन: संगठित करने में भी विशेष भूमिका निभाई। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के प्रयासों के फलस्वरूप

सिक्ख कुछ ही समय में फिर अब्दाली का मुक़ाबला करने में समर्थ हो गये।

कपूरथला में राजधानी की स्थापना : सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने कपूरथला, सरलपुर, फतिहाबाद, सुलतानपुर, ईसड़ू, सफीदों, जंडियाला, नूरमहल, कोट शिताब, मसामी, बेगोपुर, सराय नूरुद्दीन, गोइंदवाल, सरहाली, वैरोवाल आदि क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की और कपूरथला को अपनी राजधानी बनाया।

सरदार जस्सा सिंघ ने अपना एक सिक्का भी चलाया, जिस पर दर्ज था :

सिक्का ज़द दर जहां ब-फजलि-अकाल।
तःखति अहिमद गरिफ़्त जस्सा कलाल।

सुल्तान-उल-क़ौम : महान सिक्ख जरनैल सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया सन् १७८३ ईसवी में, ६५ वर्ष की आयु में श्री अमृतसर साहिब में 'अकाल प्रस्थान' कर गये। आपका स्मारक गुरुद्वारा बाबा अटल राय जी के पास स्थित है। सरदार भाग सिंघ आपके उत्तराधिकारी बने। सरदार भाग सिंघ के पुत्र सरदार फतह सिंघ ने सन् १८०१ ईसवी में कपूरथला रियासत की स्थापना की। सिक्ख पंथ के अद्वितीय नेतृत्व और अनुपम सेवा-भाव के कारण सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को 'सुल्तान-उल-कौम' की उपाधि प्राप्त है।

कविता

कदम बढ़ाओ!

*–श्री प्रशांत अग्रवाल**

तम के बादल घेर रहे, कोई सूरज चमकाओ !
सूरज न चमका पाओ तो, सूर्य-किरण बन जाओ!
सूर्य-किरण भी बनना मुश्किल, तो फिर दीया जलाओ!
अगर दीया भी न जल पाये, चिंगारी सुलगाओ!
सबके दिल हैं बुझे-बुझे, आशा की जोत जलाओ!
जितना तुम चल सकते हो, उतने तो कदम बढ़ाओ!!
निराशा से हर कोई आकुल, कोई मार्ग नया दिखलाओ!
भरोसे की बदली बनकर तुम, बरसो, प्यास बुझाओ !
या फिर बनो जल-स्त्रोत तुम, निष्ठा की नदिया लाओ !
नीरसता की अस्थि बहा, सुख की रसधार बहाओ!
न हो पाये तो आशा की, एक किरण बन जाओ!
जितना तुम चल सकते हो, उतने तो कदम बढ़ाओ!!
काली रात है नागिन-सी, तुम स्वयं सूरज बन जाओ!
दुखों का दावानल घेरे, सुख-मेघ बन जाओ!
कलियुग की लू जड़े थपेड़े, तुम बयार बन जाओ!
दुर्भावों की तपन जलाती, सुविचार बन जाओ!
संघर्षों से जो थकते उनका, साहस तुम्हीं जगाओ!
भवसागर में डूबें जो, केवट बन पार लगाओ!
यह संभव है डूब रहे को, तुम तिनका बन बचाओ!
जितना तुम चल सकते हो, उतने तो कदम बढ़ाओ!

**४० बजरिया मोतीलाल, बरेली (उ. प्र.)–२४३००३, फोन : ९४११६-०७६७२*

मिसलदारी काल का प्रेरणा-स्त्रोत सिक्ख : सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया

*–प्रो. बलकार सिंघ**

गुरसिक्खों ने गुरु-काल में गुरु-देह के साथ चलते हुए शब्द-गुरु के साथ चलना भी सीख लिया था, क्योंकि इस तरह की सिक्ख मानसिकता की संरचना गुरु साहिबान के नेतृत्व में लगातार हो रही थी। इसका प्रकट रूप १७०८ ई. में बाबा बंदा सिंघ बहादुर के नेतृत्व में आना शुरू हुआ था। बेशक मिसलों का आधार बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत के बाद निर्धारित होता है, परन्तु इसका प्रेरणा-स्त्रोत "गुरू मानिओ ग्रंथ" की सैद्धांतिक और पारंपरिक निरंतरता में रहता है। वो समय सिक्खों के लिए किसी भी पक्ष से सुखद नहीं था, क्योंकि समकालीन परिस्थितियों में पत्ता-पत्ता सिक्खों का शत्रु बना हुआ था। 'सियासतनुमा धर्म' मुगलों के माध्यम से और 'धर्मनुमा राजनीति' सिक्खों के माध्यम से अजब किस्म के संघर्ष के द्वारा पहली बार भारत में सामने आ रही थी। इस भावना से अलग ढंग के साथ भारत में ही मुगलों के ख़िलाफ़ शिवा जी मरहठा (मराठा) के नेतृत्व में विद्रोह भी सामने आ रहा था। मरहठों के ख़िलाफ़ मुग़लिया हुकूमत ने वैसा ज़ुल्मी आतंक नहीं फैलाया था, जैसा पंजाब में सिक्खों के ख़िलाफ़ फैलाया हुआ था। इस सब कुछ को इतिहास के रूप में उस तरह से नहीं संभाला गया, जिस तरह संभाला जाना चाहिए था। सिक्ख इतिहास को पहचानने और बनाने का कोई विधि-विधान न तब था और न आज है। सिक्ख धर्म के अपनों के पास इस गौरवमयी इतिहास को संभालने का कोई मौका नहीं था और बेगानों को इसकी ज़रूरत नहीं थी। इतिहास के सत्य-असत्य को पहचानने का अगर कोई विधि-विधान न हो तो इतिहास को किसी भी काल के विचार-विमर्श के केंद्र में नहीं लाया जा सकता। इस हाल में वारिसों को आम तौर पर तटस्थ (Indifferent) रहने का और शोषित (Exploited) होने का शिकार होना पड़ता है। सिक्खों को अपना इतिहास स्वयं लिखने की दिशा में चलने का शायद कभी मौका भी नहीं मिला और जिन्हें विभिन्न कारणों से मिला भी था या मिला है, वे सिक्ख इतिहास का सिक्ख प्रसंग में बहुत-से कारणों से निर्माण नहीं कर सके। इसके अलावा श्री गुरु ग्रंथ साहिब के नेतृत्व में पैदा हुए इतिहास को पहले इच्छित प्रभाव में

**३४, फेस– १, अरबन अस्टेट, पटियाला–१४७००२, फोन : ९३१६३-०१३२८*

लिखा जाता रहा और फिर इसी को उन्हीं सिक्ख विरोधी स्रोतों के हवाले के साथ लिखा जाता रहा है। इसकी पुष्टि भाई वीर सिंघ की इस टिप्पणी के साथ हो जाती है कि "वास्तव में महापुरुषों के इतिहास केवल-मात्र तथ्यों पर आधारित नहीं होते, उनमें लोक-मन पर पड़े उनके प्रभाव रचनाकार की लेखनी से ही प्रकट होते हैं।"

सिक्ख धर्म के सभी महानायकों का ऐतिहासिक प्रसंग गुरबाणी के आलोक में ही लिखा जा सकता है। ऐसा न हो सकने के कारण सिक्ख धर्म के महानायकों को बरास्ता पुरालेखीय इतिहास होने की दिशा में धकेल दिया जाता रहा है। इसके साथ ही यह कहना चाहता हूँ कि सिक्ख इतिहास जुनून-उद्देश्य-पूर्ति और इच्छित परिणाम के मुताबिक लिखा जाता रहा है और उसमें से गुरमति के रंग मनफी होते रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप सिक्ख इतिहास की वह वास्तविकता सामने नहीं आ सकी, जो सिक्ख मानसिकता ने "पंथ तेरे दीआं गूँजां दिनों दिन पैंदीआं रहिणगीआं" की भावना में सदा संभाले रखी थी। इसी कारण भाई वीर सिंघ को यह टिप्पणी करनी पड़ी थी कि "सिक्ख ईमान की बुनियाद दैवीय ज्ञान पर आधारित है। प्रभु-रूप दस गुरु साहिबान को प्रभु के निरंतर मिलाप में जो ज्ञान स्वाभाविक रूप से प्राप्त था, वह अपनी निर्मलता में उनके हृदय में से 'बाणी' और 'हुक्म' का रूप लेकर प्रकट हुआ। इसी पर सिक्खी ईमान की बुनियाद केंद्रित है।" इसे ध्यान में रखेंगे तो समझ सकेंगे कि सिक्ख-पुरखों का विरासती प्रसंग हमारे सामने नहीं आ सका। इसके विस्तारपूर्वक विवरण हेतु 'सिंघ ब्रादर्स' द्वारा प्रकाशित मेरी पुस्तक "सिक्ख पुरखिआं दा विरासती प्रसंग" (सन् २०२२) को देखा जा सकता है। इस दृष्टि से यह कहने की कोशिश की जा रही है कि सिक्ख इतिहास को अगर शब्द-गुरु के आलोक में लिखा जाता तो यह पूर्णत: सत्य स्थापित हो जाना था कि सिक्ख इतिहास, हर प्रकार की अंतर्दृष्टियों को साथ लेकर चलता रहा है। इस प्रसंग में मिसलदारी काल की पंथक पहरेदारी के प्रतिनिधि सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया (सन् १७२३-१८०३) के बारे में चर्चा की जा रही है। मिसलदारी काल के आरंभ का भी यही समय है, क्योंकि सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया इनसे पाँच वर्ष बड़े थे। दोनों ने मिसलदारियों की उत्पत्ति, विकास और स्थापि में अहम भूमिका निभाई थी। दोनों उस सिक्ख-रंग में बड़े हुए थे, जिसे प्रो. पूरन सिंघ ने इस तरह लिखा है— "जहाँ पर भी कोई सिक्ख बसता है, वहां पर वो उस छाया दार वृक्ष की भाँति होता है जिसके नीचे धूप व प्यास से

व्याकुल राही-मुसाफ़िर, चाहे वे किसी भी जाति के हों, आकर विश्राम करते हैं और सुख-आनंद लेते हैं।" (गुरसिक्खी दा सिक्खणा, पृष्ठ ११३) यह भावना मिसलदारियों के समय 'राखी-प्रबंध' (सुरक्षा-प्रबंध) के रूप में सामने आई थी। उस स्थिति को भी प्रो. पूरन सिंघ के शब्दों में इस प्रकार समझा और समझाया जा सकता है— "जिनके पास बाज की तरह उड़ने की शक्ति नहीं, वे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की कृपाण के संग नहीं रह सकते। यह तो गुरु के सिक्ख की अजीब शख्सियत का चिह्न है, जो कभी हार नहीं मानती, मायूस नहीं होती; वो शख्सियत, जिसकी आशा नहीं टूटती, जिसकी रूहानी चमक कभी नहीं मरती।" श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी कहते हैं— "सवा लाख से एक लड़ाऊं।" इसी विजेता-तर्क के प्रतिनिधि थे— सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया और इसी धरातल पर उनके योगदान को वर्तमान में उतारने की कोशिश की जा रही है।

जो कोई भी अपने समकालिक प्रेरणा-स्रोत के रूप में भूमिका निभाता है, वह सर्वकाल के लिए विचार-चर्चा का केंद्र हो जाता है। ऐसे सिक्ख योगदानियों को विचारकों ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के उपवन का फूल कहा है।

सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया ऐसे ही थे। उस समय आत्मनिर्भरता के लिए संघर्ष ही गुरु के सिक्खों के लिए शिक्षण-संस्था हुआ करती थी। शिक्षा का आरंभ और अंत, श्री गुरु ग्रंथ साहिब के साथ सीधा जुड़े रहने के लिए गुरमुखी अथवा पंजाबी सीखना ही होता था। ऐसा बहुधा माँ-बाप के माध्यम से ही संभव होता था और इसकी अनुपस्थिति में 'गुरुद्वारा संस्था' आवश्यक भूमिका निभाती थी। अमृत छक कर गुरु वाले बनने का उत्साह आम था, क्योंकि सिक्ख भाईचारे में ऐसे सिक्ख ज़िंदा थे, जिन्होंने दशम पातशाह हजूर से अमृत छका हुआ था। सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया के दादा सरदार हरदास सिंघ और पिता ज्ञानी भगवान सिंघ ऐसे सिक्खों में से एक थे। दादा जी, बाबा बंदा सिंघ बहादुर के नेतृत्व में लड़ते हुए 'बजवाड़ा की जंग' में शहीद हो गए थे। रोज़ी-रोटी के लिए बेशक पुश्तैनी व्यवसाय किया करते थे, मगर युद्ध-कला का प्रशिक्षण सिक्ख सामाजिकता का अंग होने के कारण युद्ध के लिए खालसा तैयार-बर-तैयार रहता था। सरदार जस्सा सिंघ जवानी में पैर रखते ही अपने पिता के नेतृत्व में युद्धों में भाग लेने लगे थे और अपने पिता को शहीद होते उन्होंने अपनी आंखों से देखा था। सिक्ख शौर्य सहित जीवन-यापन करने करने की भावना को मुख्य रखते हुए उनके पाँच पुत्रों को जागीर देकर सम्मानित किया गया था। इसके साथ ही

'रामगढ़िया मिसल' की आधारशिला रखी गई थी, क्योंकि इस परिवार के पास श्री अमृतसर साहिब के इलाके में वल्ला, वेरका, सुलतानविंड, तुंग और चब्बा गाँव के मालिकाना हक आ गए थे। मिसल काल में ज़िंदगी के किसी भी क्षेत्र में इस प्रकार से संघर्षरत् सिक्खों का भरोसा था कि हर मैदान फतह गुरु ने प्रदान करती है। इसे ढाडी सोहण सिंह सीतल ने इस प्रकार ज़बान दी है :

सीतल जित्त हार वस्स करतार दे,
ज़ोर घट्ट नहीं किसे ने लाइआ।

मिसलों के गठन के समय पंजाब में इसलामी जागीरदारियां उपस्थित थीं और उनमें से बहुत-सी अब्दाली जैसे आक्रमणकारियों के विरुद्ध लड़ भी रही थीं। इनमें सिक्ख भी शामिल होते रहे थे और ऐसी ही एक लड़ाई में सरदार जस्सा सिंघ ने अब्दाली के विरुद्ध १७४८ ई. में संघर्ष की शुरूआत की थी। उसके बाद ज़िंदगी भर सिक्ख राज स्थापित होने तक केशों-श्वासों के संग प्रवान चढ़ते रहे। जब महाराजा रणजीत सिंघ का कब्ज़ा लाहौर पर हुआ था तो उसमें सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया ने अहम भूमिका निभाई थी। जिस प्रकार वे बाहर से पैदा किये अवसरों को संभालते रहे, वैसे ही वे अंदर से पैदा होने वाली समस्याओं के साथ भी जूझते रहे। मिसलदारों के पास जागीरदारियां किसी प्रबंध के मुताबिक शुरूआत में नहीं थीं और मिसलदारों के बीच अधिकार-क्षेत्र की सीमा को लेकर आपस में झगड़े रहते थे। ऐसे ही एक झगड़े में सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को कैद कर रामगढ़िया सरदार के समक्ष पेश किया गया था। सज़ा देने की जगह दोनों एक दूसरे के गले मिले थे। तीमारदारी के उपरांत स्वस्थ होने पर पूर्ण सम्मान सहित एक-दूसरे से अलग हुए थे। ऐसा एक मौका पहले १७६२ ई. वाले 'बड़ा घल्लूघारा' के समय भी आया था। दोनों सरदार बढ़-चढ़ लग कर लड़ते थे। अब्दाली के साथ हुए उस युद्ध के बारे में मशहूर है कि सिक्खों में से कोई भी 'दसतारधारी' ऐसा नहीं था, जो घायल न हुआ हो। आहलूवालिया सरदार भी बुरी तरह से ज़ख्मी हो गए थे, परन्तु वे मैदान छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे। रामगढ़िया सरदार ने उन्हें संभाला और उनके ज़रूरी इलाज व आराम का प्रबंध किया था। दोनों सरदारों के बारे में विख्यात था कि दुश्मन उनका जंग के मैदान में सामना करने से कतराते थे, क्योंकि वे 'सवा लक्खी' जज़्बे के साथ जूझते थे। इस घल्लूघारा में अकाली फूला सिंघ के पिता भी शहीद हो गए थे। "जूझ मरउं तउ साचु पतीजै" की पंथक भावना, मिसलदारी के विजेता तर्क की प्रेरणा-स्रोत थी और इसी में से सिक्ख सरकार-ए-

खालसा अर्थात् सिक्ख राज स्थापित हुआ था।

आपसी झगड़ों का नतीजा था कि रामगढ़िया सरदार को अपना इलाका छोड़ कर सतलुज पार जाकर पटियाला रियासत की सहायता लेनी पड़ी थी। अपने पुत्र जोध सिंघ को पटियाला रियासत की तरफ से जींद रियासत के रूप में दी गई जागीरदारी सौंप कर, सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया स्वतंत्र रूप से विचरण करते रहे। उन्होंने स्वतंत्र रूप से एक युद्ध-वीर और युद्ध-नीतिवान की भाँति ज़रूरत के मुताबिक नीतियां और योजनाएं बनानी शुरू कर दी थीं। यह समय मुगलों के कमज़ोर और सिक्खों के मज़बूत होने का समय था। वर्तमान हरियाणा के यमुनानगर में बेग़म समरू की हुकूमत थी। उसने बाबा बघेल सिंघ को धर्म-भाई एलान किया हुआ था और यह रिश्ता 'सुरक्षा-प्रबंध' की भावना में ही निभ रहा था। बेगम समरू के माध्यम से सिक्ख नेताओं को दिल्ली की मुग़लिया हुकूमत के बारे में पता चलता रहता था। जो मुलाकात समय के मुग़ल बादशाह के साथ लाल किले में हुई थी, उसकी मध्यस्थता बेग़म समरू ने ही की थी। आर्थिक सहायता के लिए मिसलदारों से सहायता आती थी। हालत यह हो गई थी कि दिल्ली के लोगों ने सरकार को कर देना बंद कर दिया था। मीटिंग के लिए जो पाँच जरनैल शामिल होने के लिए दिल्ली गए थे, उनमें दोनों वीर— सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया और सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया भी शामिल थे। समझौता तो यह हुआ था कि दिल्ली से होने वाली आमदन दोनों धड़ों अर्थात् सिक्खों व मुग़ल सरकार के बीच बाँटी जायेगी, परन्तु सिक्ख जरनैलों ने यह शर्त भी मनवा ली थी कि गुरु साहिबान की स्मृति-रूप स्थानों पर गुरुद्वारे बनाने की सिक्खों को छूट होगी। बादशाह ने यह शर्त मान ली। दिल्ली के सभी ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान उस समय के ही बने हुए हैं। इसके विस्तार में जाए बिना यह कहना चाहता हूँ कि जिस प्रकार उस समय के सिक्ख जरनैलों ने अपनी विरासत को गुरुद्वारा साहिबान के रूप में संभाला, अगर हम उसे समझ कर, उसके साथ चलेंगे तो वह स्थिति और मार्गदर्शन, अपने आप में गुरमति के मार्ग पर चलने व चलाने के लिए तथा पंथक भावना को बनाए रखने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

रामगढ़िया मिसल के प्रमुख सरदार जस्सा सिंघ ही हैं, क्योंकि इससे पूर्व 'बढ़ई' व्यवसाय से संबंधित सिक्ख भाईचारे को 'रामगढ़िया भाईचारा' नहीं कहा जाता था। रामगढ़िया और आहलूवालिया सरदारों के लिए श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर साहिब की अहम भूमिका थी, क्योंकि वहाँ से श्री अकाल तख़्त साहिब पर

पंथक फ़ैसले लिए जाते थे। दोनों सरदारों ने मिल कर मिसलदारियों के आपसी झगड़ों को दूर करने के लिए अपेक्षित पंथक नियमावली बनाई थी। मिसल काल में ही श्री गुरु रामदास जी के नाम पर 'रामरौणी' नामक किला बनाया गया था। ताकत परखने की ज्यादातर लड़ाइयों का केंद्र 'रामरौणी' का किला ही होता था। जितनी बार इस किले को विरोधियों द्वारा ध्वस्त किया गया, उसे फिर से बनाने का काम गुरु के सिक्ख करते रहे। यह ज़िम्मेदारी पंथ की तरफ से सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया को पक्के तौर पर सौंप दी गई थी। इस किले के निर्माण की योजना की स्वीकृति सरदार सुक्खा सिंघ माड़ी कंबोके ने पंथ से ली थी। रामगढ़िया भाईचारे में से यह सिंघ मस्सा रंघड़ का सिर कलम करने के समय सरदार महिताब सिंघ के साथ था और १७५२ ई. में अब्दाली का मुकाबला करते हुए शहीद हो गया था। सरदार सुक्खा सिंघ ही था जो मस्सा रंघड़ द्वारा श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के सरोवर में स्नान करने पर लगाई गई पाबंदी के विरुद्ध जान जोखिम में डाल कर स्नान करने जाया करता था। 'रामरौणी' के किले की आरंभता सरदार सुक्खा सिंघ के नेतृत्व में ही हुई थी। इस किले का नाता रामगढ़िया भाईचारे के साथ बहुत-से कारणों से जुड़ा हुआ है, क्योंकि किलों के निर्माण के लिए जिस तकनीकी कुशलता की ज़रूरत होती है, वो रामगढ़िया भाईचारे के ख़ून में है। 'रामरौणी' किले का नाम 'रामगढ़ किला' सरदार जस्सा सिंघ के कारण ही पड़ा था, क्योंकि 'रौणी' की अपेक्षा 'गढ़' आम सिक्ख-समझ के निकट था। इसके बाद सिक्खों का 'बढ़ई भाईचारा' 'रामगढ़िया' नाम से जाना जाने लगा। इतिहासकारों ने रामगढ़िया सरदार को सिक्खी का पहरेदार और दीर्घायु भोगने वाला मिसलदार कहा है। रामगढ़िया सरदार जैसी शख़्सियतों को इतिहास की सीमाओं से मुक्त कर देखेंगे तो वे हर काल के प्रेरणा-स्रोत की भूमिका निभाने वाली प्रतीत होने लगेंगी। इतिहास तो बीत चुके का नाम है और सैद्धांतिकता सभी समय को साथ लेकर चलने के सामर्थ्य का नाम है। सिक्खी रंग में रंगे रामगढ़िया सरदार की कर्मभूमि 'सरबत्त के भले' (सर्वजन हिताय) वाली थी और इसकी प्रत्येक काल को सदा ज़रूरत रहती है।

सिक्ख इतिहास की अहम घटना : छोटा घल्लूघारा

*–प्रो. मनजीत कौर**

'छोटा घल्लूघारा' सिक्ख धर्म से सम्बन्धित महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है। जब १७४५ ई. में ज़कारिया ख़ान की मृत्यु हो गई तो उसका पुत्र याहिया ख़ान लाहौर का गवर्नर बना। नया पद संभालते ही याहिया ख़ान बड़े जोरदार ढंग से सिंघों के पीछे पड़ गया। सिंघों के घर उजाड़ दिए और उनका कत्ल किया जाने लगा। सिंघ अपना घर-घाट छोड़ कर जंगलों में चले गए। इस समय दीवान लखपत राय (लक्खू) और उसका भाई जसपत राय याहिया ख़ान के ख़ास करिन्दे थे। लखपत राय लाहौर में मंत्री था और जसपत राय एमनाबाद का फ़ौजदार नियुक्त था। इन दोनों भाइयों ने सिंघों के विरोध में लाहौर के गवर्नर का डटकर साथ दिया। याहिया ख़ान ने अपने फ़ौजी गश्ती दल सिंघों की खोज में छोड़ रखे थे, जो सिंघों को पकड़ लाते या अकेले-दुकेले सिंघ को मौके पर ही कत्ल कर देते थे। सिंघ गंभीर मुसीबत में घिरे हुए थे। हर दिशा से दुश्मन उनका रास्ता रोके खड़ा था। सिंघ ऐसी मुश्किलों का सामना करते हुए अपना वक्त गुज़ार रहे थे।

इसी समय के दौरान सिंघों का एक जत्था गुरुद्वारा रोड़ी साहिब (वर्तमान में पाकिस्तान में स्थित) दर्शन करने जा रहा था कि लंगर-परशादा छकने के लिए बद्दोकी गुसाईआं की झिड़ी (छोटा जंगल) में बैठ गया। सिंघों का जत्था कई दिनों से भूखा था, जिस कारण वो यहाँ रुक कर खान-पान में लग गया। फ़ौजदार जसपत राय खोखरां गाँव में ठहरा हुआ था। गाँव गोदलां के सरकारी मुखबिरों ने जसपत राय को ख़बर दी कि सिंघों का एक बड़ा जत्था झिड़ी में रुका हुआ है।

जसपत राय ने बड़े आक्रोश के साथ सिंघों को संदेश भेजा कि इस इलाके में से एक दम कूच कर जाओ, नहीं तो कर अदा करना पड़ेगा। सिंघों ने कहा कि "हम लोग कई दिनों से भूखे हैं। हमें खान-पान का बंदोबस्त कर लेने दो! हम कल को यहाँ से चले जायेंगे।" जसपत राय अहंकार से भरा हुआ था। उसने कहा, "तुम लोग मेरे इलाके में से अन्न ढूंढ रहे हो! मैं तो तुम्हारा खुराखोज मिटा दूंगा!"

"सीस मुनाइ तुमै जाट बणावों, तुमरे बालन की माला बणावों।"

जसपत राय ने इलाके के सभी चौधरियों, नंबरदारों और चट्ठों की फौज को इकट्ठा किया। चट्ठों का सरदार चौधरी शेरा कोट वाला पहली कतार में था। उसने एक भारी फ़ौज लेकर, सिंघों पर हमला कर दिया। सिंघों को तैयार किया गया

* *प्रिंसीपल, शहीद सिक्ख मिशनरी कॉलेज, श्री अमृतसर साहिब, फोन : ९४६४९-८६४४७*

लंगर भी छकना नसीब न हुआ। सिंघ जसपत राय के घेरे में घिर चुके थे! उनका किसी भी तरफ़ निकलना संभव नहीं था। भूखे-प्यासे सिंघों ने दुश्मन के किये हमले का डटकर मुकाबला करने का संकल्प किया। पहले हमले में ही सिंघों ने करारे हाथ दिखाए। जसपत राय हाथी पर सवार था। रक्त-रंजित लड़ाई हुई। सिंघों के सामने माँग कर लाई गई फौज ज्यादा देर तक टिक न सकी। दुश्मन के पैर उखड़ते देख कर कौम का वीर योद्धा भाई निबाहू सिंघ जसपत राय के हाथी की पूँछ पकड़ कर हाथी पर जा चढ़ा और कृपाण के एक ही वार से जसपत राय का सिर कलम कर दिया। इस घटना को स. रतन सिंघ (भंगू) ने 'पंथ प्रकाश' में इस तरह बयान किया है :

वहि लूटन चड़िओ ख़ालसे सो लीओ ख़ालसे लूट।
निबाहू सिंघ गज पै चढ़यो मार तेग़ दिओ सूट।

भाई निबाहू सिंघ ने फ़ौजदार जसपत राय के ज़ेवर आदि उतार कर नीचे फेंक दिए और उसका सिर लेकर भाग निकला। जसपत राय के धड़ को भी सिंघों ने अपने कब्ज़े में कर लिया। जसपत राय के मरते ही उसकी भाड़े की फौज मैदान छोड़ कर भाग गई। जसपत राय की लाश बाद में बावा कृपा राम के कहने पर सिंघों ने पाँच सौ रुपया लेकर सुपुर्द की।

सिंघों ने फिर एमनाबाद पर हमला किया, जिससे बड़ी मात्रा में धन-दौलत, रसद तथा कीमती सामान सिंघों के हाथ लगा। खालसा दल कुछ देर यहाँ पर रुका और फिर यहाँ से आगे चल पड़ा।

जब दीवान लखपत राय को अपने भाई जसपत राय की मौत की ख़बर मिली तो वह आग-बबूला हो उठा। लखपत राय ने अपनी पगड़ी सिर पर से उतार कर याहिया ख़ान के पैरों में रख दी और कसम खाई कि जब तक मैं सिंघों का खुराखोज नहीं मिटा देता, तब तक मैं सिर पर पगड़ी नहीं बाँधूंगा। याहिया ख़ान ख़ुश हुआ। उसने सिक्खों का अंत करने के लिए पूरे अधिकार लखपत राय को दे दिए। गाँवों और शहरों में शाही फरमान भेजे गए। सिंघों को अपने गाँवों, नगरों या घरों में पनाह देने वालों को सज़ा-ए-मौत का एलान कर दिया गया। 'गुरु' या 'गुड़' शब्द बोलने पर पाबंदी लगा दी गई। 'गुड़' को 'रोड़ी' या 'भेली' कहा जाने लगा। श्री गुरु ग्रंथ साहिब को 'पोथी' कहा जाने लगा। इलाके के चौधरियों और नंबरदारों को भी परवाने लिख कर भेजे गए कि सिंघों को अपने इलाके में दाख़िल न होने दिया जाए। सिंघों पर सख़्ती दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही थी।

'इबरतनामा' का कर्ता अली-उद्-दीन लिखता है कि "श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का नाम लेने वाले का पेट चीर दिया जाता था।" लखपत राय ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के स्वरूप इकट्ठे करवा कर दरिया में फेंक दिए और श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के पवित्र सरोवर को भी मिट्टी से पाट दिया। माझा इलाके में से सिंघ-सिंघनियों और उनके मासूम बाल-बच्चों को गिरफ़्तार कर लाहौर की जेल में कैद किया गया। लाहौर तथा आस-पास के इलाकों में शाही नौकरी करते सिक्खों को तुरंत नौकरी से बरखास्त कर कैद कर दिया गया। १० मार्च, १७४६ ई. को सोमवारी अमावस वाले

दिन निर्दोष सिक्खों को कत्ल करने के लिए चुना गया। लखपत राय के धर्म-गुरु गुसाईं जगत भगत, दीवान लच्छी राम, दीवान कौड़ा मल्ल तथा कुछ इंसानी हमदर्दी रखने वाले धार्मिक व्यक्तियों ने दीवान लखपत राय को निर्दोष सिक्खों का कत्ल-ए-आम करने से रोकने की बहुत कोशिश की, मगर लखपत राय ने अपनी ज़िद न छोड़ी और किसी की एक न मानी। वे लोग बड़े निराश हुए। उन्होंने कहा कि "कोई बात नहीं लखपत! तेरी जड़ उखड़ जाएगी और यह पंथ दिनो-दिन प्रफुल्लित होता जाएगा।"

आखिर दीवान लखपत राय ने गिरफ़्तार किये गए सिंघों को चरखड़ियों पर चढ़ा कर, सूली पर टाँग कर, आग में जला कर, आरे द्वारा चीर कर तथा घोर यातनाएं देकर शहीद कर दिया।

इस समय के दौरान सिंघ मैदानी क्षेत्र छोड़ कर जंगलों, झाड़ियों में छिपे हुए थे। यह समय सिंघों के लिए बड़ी मुसीबत वाला था। याहिया ख़ान और लखपत राय एक बड़ी फ़ौज, तोपें आदि लेकर सिंघों पर चढ़ाई करने के लिए चल पड़ा। उसने बड़ी संख्या में नई फ़ौज भी भरती भी की। मुलतान, लाहौर और बहावलपुर तक की सारी फ़ौज भी अपने साथ शामिल कर ली। पहाड़िए नवाबों को भी मदद के लिए शाही फरमान भेजे गए। स. रतन सिंघ (भंगू) ने इस समय का दृश्य इस तरह पेश किया है :

मुलतान बहावल मुलके ताबें,
दीनी फ़ौज नवाब चढ़ाई।
कसूर आद लौ अटक सु ताकर।
और दुआबे तिहाड़े ला कर।
लिख भेजे तिन सकल पहाड़।
नवाब बुलाए कर बहु ताड़।

लगभग पंद्रह हज़ार सिंघों का दल काहनूंवान के छंभ (जोहड़) के आस-पास ठहरा हुआ था। इनमें सरदार कपूर सिंघ, स. सुक्खा सिंघ माड़ी कम्बोके, स. गुरदयाल सिंघ डल्लेवालिया, स. चढ़त सिंघ शुकरचक्किया, सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया मुख्य थे। सिंघों के लिए यह कठिन विपदा का समय था। दुश्मन की संख्या ज़्यादा थी और सिंघों की संख्या कम थी। जंगी सामान की भी कमी थी, भूख का दुख भी सता रहा था। स. रतन सिंघ (भंगू) इसका हवाला इस तरह देता है :

तब सिंघन को बहुत सताया।
खाणे नूं कुछ हत्थ न आया।

भूखे-प्यासे सिंघ आगे की तरफ बढ़ने लगे। सिंघ इस समय ऐसे इलाके में थे, जहाँ दायीं तरफ़ रावी नदी थी, पीछे दुश्मन की फ़ौज, सामने पहाड़ों पर से बरसते पत्थर पर गोलियाँ थीं। न रसद, न पानी, न तोपें, न घोड़े और न ही कोई जंगी सामान था सिंघों के पास। केवल अपने धर्म और अकाल पुरख पर अटूट विश्वास था, जिसकी बदौलत सिंघों के हौसले बुलंद थे, जिस कारण वे चढ़दी कला (बुलंद अवस्था) के जयकारे गुंजा रहे थे। सिंघ जंगल चीरते हुए आगे निकलते जा रहे थे और पीछे लखपत राय हमला करता हुआ आ रहा था। कई बार सिंघ पीछे लौट कर शत्रु-दल पर वार कर अनाज आदि छीन कर हरण हो जाते थे। सिंघ धीरे-धीरे पहाड़ी क्षेत्र की तरफ बढ़ने लगे, क्योंकि

जंगली झाड़ियों को लखपत राय आग लगा कर या तोपों से गोलों बरसा कर जलाए जा रहा था। सिंघों ने आमने-सामने की लड़ाई लड़ते हुए शहीद होने का फ़ैसला किया। जंग लड़ने के लिए सिंघों ने घोड़ों का प्रबंध करने की योजना बनाई। कुछ सिंघ दुश्मन को चकमा देने के उद्देश्य से मैदान से भाग निकले और रात के समय पुन: लौट कर दुश्मन दल पर हमला कर घोड़े एवं रसद आदि लेकर फिर जंगल में जा घुसे।

सिंघों के इस कारनामे ने लखपत राय को और चिढ़ा दिया। उसने जंगल कटाना शुरू कर दिया। वो जंगल में छिपे सिंघों पर तोपों व गोलियों की वर्षा कराने लगा। आखिर सिंघ जंगल में से बाहर निकल गए। दुश्मन-दल उनका पीछा करता हुआ आ रहा था। एक जगह स. गुरदयाल सिंघ डल्लेवालिया के दो भाइयों ने रावी का बहाव देखने के लिए अपने घोड़े रावी दरिया में ठेल दिए, परंतु पानी का बहाव इतना तेज़ था कि दोनों सिंघ घोड़ों सहित पानी में बह गए। सिंघ बसौली की तरफ बढ़े। आगे से राजपूतों ने उनका तगड़ा मुकाबला किया। कुछ सिंघों ने पहाड़ों पर चढ़ने का यत्न किया तो पहाड़ी लोगों ने गोलियाँ और पत्थर मारकर सिंघों को शहीद व घायल कर दिया। सिंघ घोर मुसीबत में घिरे हुए थे। कई दिनों की थकावट, भूख और कई दिनों का जागना था, मगर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। भूख और मुसाफिरी को चिंतकों ने मौत का रूप माना है। ये साहसी योद्धा आस्था के पक्के थे, तभी सिर पर पड़ी विपदा का मुकाबला करने के लिए पूरे जोश में थे :

अद्धी मौत मुसाफरी सारी मौत सु भुक्ख।
ऊहां आइ दोऊ मिली यह भयो ख़ालसे दुक्ख।

आखिर, सिंघों ने मैदान में आमने-सामने होकर लड़ने का फ़ैसला किया। मुखिया सरदारों की कमान तले सिंघों ने दुश्मन फ़ौज का डट कर मुकाबला किया। इस जंग के दौरान स. सुक्खा सिंघ माड़ी कम्बोके वाले लखपत राय को ढूँढते रहे, मगर वो काबू न आया। तोप के गोलों से स. सुक्खा सिंघ की टांग की हड्डी टूट गई, मगर इस धार्मिक योद्धा ने इस चोट की कोई परवाह न की। अपनी दसतार फाड़ कर टांग घोड़े की काठी के हत्ने के साथ बाँध ली और जंग जारी रखी। इस जंग में जसपत राय के पुत्र हरभज राय और याहिया ख़ान के पुत्र नाहर ख़ान के अलावा मख़मूर खान, फ़ौजदार सैफ अली ख़ान, कर्म बख्श रसूल नगरिया, अगर ख़ान आदि मारे गए। स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया और स. चढ़त सिंघ शुकरचक्किया को भी गंभीर चोटें आईं, मगर ये सिंघ 'सति श्री अकाल के जयकारे' लगाते हुए मैदान-ए-जंग में डटे रहे। सिक्ख इतिहास में यह ऐसा दिन था, जिसमें हज़ारों की संख्या में सिंघ शहीद हुए थे।

इस घल्लूघारा में सिक्ख कौम का बहुत नुकसान हुआ। सिक्ख इतिहास इसे 'छोटा घल्लूघारा' के नाम से याद करता है। यह घल्लूघारा मई, १७४६ ई. में घटित हुआ। इस दिन की याद में ज़िला गुरदासपुर के नगर काहनूंवान में प्रत्येक वर्ष शहीदी जोड़ मेला आयोजित किया जाता है।

मनुष्य और श्रम : गुरबाणी के आलोक में

*–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ **

श्रम और मनुष्य का अपरिहार्य संबंध है। मानव सभ्यता के विकास को मनुष्य के किये श्रम ने ही सुनिश्चित किया है। मनुष्य ने अपने सपनों और कल्पनाओं को श्रम द्वारा ही यथार्थ में बदला है, फिर भी श्रम को लेकर विशेष रूप से भारतीय समाज में कई पूर्वाग्रह पोषित किये जाते रहे हैं। वर्ण-व्यवस्था ने जहां मनुष्य मनुष्य में भेद स्थापित किया वहीं श्रम की मूल भावना को भी आहत किया। श्रम को दो भागों में विभक्त कर दिया गया। मानसिक श्रम पर उच्च वर्ग ने अधिपत्य जमा लिया और शारीरिक श्रम का उत्तरदायित्व निम्न माने जाने वाले वर्गों के हिस्से आया। पश्चिमी देशों के दार्शनिकों ने इसे शारीरिक बल के साथ जोड़ा। इससे समाज में विषमतायें बढ़ती गईं। पंद्रहवीं शताब्दी में श्री गुरु नानक साहिब ने इस मानसिकता पर कठोर प्रहार किया, क्योंकि इससे मानवीय असमानता पैदा हो रही थी। श्री गुरु नानक साहिब का धर्म-दर्शन मानव-समानता पर आधारित था। जिन्हें निम्न मान कर हेय दृष्टि से देखा जा रहा था, श्री गुरु नानक साहिब ने स्वयं को उनके साथ खड़ा करते हुए कहा कि उन्हें मनुष्य द्वारा स्थापित की गई उच्चता स्वीकार्य नहीं है :

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस॥
जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १५)

श्री गुरु नानक साहिब को असंख्य लोग अपना पूज्य मानने लगे थे, किन्तु समाज में जिसे सबसे निम्न माना जा रहा था श्री गुरु नानक साहिब ने स्वयं को उनका साथी बताते हुए उनके साथ होने की बात की। उन्होंने कहा कि जो अपने को उच्च मान रहे हैं उनकी उच्चता से उन्हें कोई सरोकार नहीं, क्योंकि यह मिथ्या उच्चता-निम्नता है। गुरु साहिब ने कहा कि जहां पर निम्न माने जाने वालों को भी समान आदर और स्थान प्राप्त हो वहीं पर परमात्मा की कृपा बरसती है। इसका सीधा प्रभाव था कि प्रत्येक मनुष्य समान तल पर खड़ा है। वह समान महत्व का अधिकारी है। मनुष्य को यदि परमात्मा की कृपा चाहिये तो उसे समानता की इस भावना को ग्रहण करना होगा। श्री गुरु नानक साहिब के उपदेश सभी के लिये समान थे। उनके दरबार में सभी को समान स्थान प्राप्त होता था। श्री गुरु नानक साहिब की दृष्टि में केवल कार्य का नहीं, भावना और निष्ठा से किये गए कार्य का सम्मान था। उनके दरबार में अनेक सेवक थे, किन्तु भाई लहिणा जी की सेवा इसलिये स्वीकार्य हुई, क्योंकि उनमें भावना और समर्पण था।

श्रम का प्रयोग गुरु साहिबान ने भक्ति के प्रतीक

**ई– १७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ – २२६०१७, फोन : ९४१५९६०५३३, ८४१७८५२८९९*

के रूप में कर उसे अधिक सम्मानजनक बना दिया। श्रम मनुष्य के जीविकोपार्जन का माध्यम था। श्रम के बिना जीविका चलाना सम्भव नहीं था। जीविकोपार्जन के मुख्य साधन थे— कृषि, व्यापार और नौकरी। इनमें से प्रत्येक साधन में सफलता तभी प्राप्त होती है जब कार्य परिश्रम और निष्ठा से किया जाये। श्री गुरु नानक साहिब ने सबसे पहले कृषि का संदर्भ भक्ति के साथ जोड़ कर देखा :

मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु॥
नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५९५)

मनुष्य का मन हलवाहा है। कृषि का कार्य सद् आचरण है। श्रम खेत में दिया जाने वाला सिंचाई का जल है और तन खेत है। परमात्मा की भक्ति में मनुष्य अपने मन को हलवाहा बना ले और भक्ति को वैसे ही करे जैसे कृषि को एक निश्चित नियम से करता है। भक्ति को वैसे ही समर्पित हो जैसे वह खेत को मनोभाव से सींचता है। जैसे वह खेत का उपयोग फसल पैदा करने के लिये करता है वैसे ही तन को भक्ति के लिये प्रयोग करे। खेत में अति संयम से बीज बोये जाते हैं, वैसे ही मनुष्य 'नाम' जपे। जैसे पाटा जुते हुए खेत की मिट्टी को समतल कर देता है तथा हल का फल मजबूती से खेत में चल कर मिट्टी को पलट देता है, वैसे ही मनुष्य दृढ़ता से संतोष और संयम धारण कर इसे अपने व्यवहार में प्रकट करे। कृषि-कार्य करते हुए मनुष्य अति सादगी में रहता है, वैसे ही मनुष्य जीवन में विनम्रता और सहज धारण करे। इसका यह भी भाव था कि मनोयोग से की जाने वाली कृषि भी परमात्मा की भक्ति के तुल्य ही श्रेष्ठ है।

हाणु हटु करि आरजा सचु नामु करि वथु॥
सुरति सोच करि भांडसाल तिसु विचि तिस नो रखु॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५९५)*

मनुष्य सदा अपने तन और निरंतर व्यतीत हो रही आयु को दुकान बनाये, जिसमें परमात्मा के नाम को वस्तु बना कर रखे, जैसे किसी दुकान में वस्तुओं को सजा कर रखा जाता है। मनुष्य अपनी विचारशीलता को भंडार-गृह बनाये और उसमें परमात्मा के प्रति भावना को सुरक्षित रखे। इसका सांसारिक भाव था कि मनुष्य व्यापार को पूर्ण समर्पण और भावना के साथ करे, तभी वह लाभदायक है।

पुरातन काल में वस्तुएं लेकर सौदागर दूर देशों में बेचने के लिये जाया करते थे। श्री गुरु नानक साहिब ने उसका उदाहरण भी दिया :

सुणि सासत सउदागरी सतु घोड़े लै चलु॥
खरचु बंनु चंगिआईआ मतु मन जाणहि कलु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५९५)

वस्तुओं को बेचने के लिये परदेस जाने वालों को सौदागर कहा जाता था। सौदागर घोड़ों पर व्यापार करने जाया करते थे। गुरु साहिब ने कहा कि व्यापार करने जाना है तो घोड़े सत् के हों अर्थात् भक्ति करनी है तो आचरण सच्चा हो। सौदागर राह-खर्च के लिये कुछ धन रख लिया करते थे। परमात्मा-भक्ति के मार्ग पर सत्-कर्म, पुण्य-कर्म आदि राह-खर्च का कार्य करते हैं। पुण्य-कर्म करने में कभी विलम्ब नहीं करना चाहिये, जैसे राह-खर्च के लिये धन साथ रखने में

कभी लापरवाही नहीं की जाती।

श्री गुरु नानक साहिब ने नौकरी की भी बात की :

लाइ चितु करि चाकरी मंनि नामु करि कंमु॥
बंनु बदीआ करि धावणी ता को आखै धंनु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५९५)

मनुष्य जैसे नौकरी पूरे मन से करता है, ताकि उसका स्वामी प्रसन्न रहे और उसकी नौकरी बनी रहे, क्योंकि नौकरी से ही उसकी, उसके परिवार की आजीविका चलती है, परमात्मा की भक्ति, सेवा भी उसी भाव से करना ही योग्य है। चाकर अपने स्वामी का विश्वास करता है कि उसे सेवा का प्रतिफल देगा, वैसे ही विश्वास के साथ मनुष्य परमात्मा का नाम जपे। चाकर जैसे अपने स्वामी की इच्छानुसार ही कार्य करता है वैसे ही मनुष्य अपने आप को अवगुणों, पाप-कर्मों से दूर रखे, तभी उसकी भक्ति परमात्मा की दृष्टि में स्वीकार होगी।

श्री गुरु नानक साहिब ने प्रत्येक कार्य को उसके गुणों और कार्य के पीछे की भावना के आधार पर सम्मानजनक बता कर, परमात्मा के मार्ग पर चलने वाले भक्त को उससे प्रेरणा लेने का उपदेश दिया है। यदि गुण और भावना नहीं है तो कोई भी कार्य, चाहे कितना भी श्रेष्ठ माना जाता हो, सम्मानयोग्य नहीं रह जाता है। कोई कार्य यदि जातिगत है तो मात्र इस कारण कि जाति उच्च मानी जाती है, श्रेष्ठ नहीं हो जाता है। कोई कार्य यदि भावना और समर्पण से किया जा रहा है तो भले ही सामाजिक व्यवस्था में उसे नीम श्रेणी में रखा गया हो, स्वयं ही श्रेष्ठ हो जाता है। यह श्रेष्ठता परमात्मा प्रदान करता है, जैसे भक्त रविदास जी पर कृपा कर उन्हें आदरयोग्य बना दिया, भले ही वे जूतियां बनाने का कार्य किया करते थे :

तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा॥
नीच रूख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८६)

परमात्मा के निकट रह कर भक्त रविदास जी में परमात्मा के गुण समाहित हो गये। वे इरंड के पौधे से चंदन बन गये। उनका जूतियां बनाने का कार्य भी गौरवान्वित हो गया। उन्होंने अपने कार्य को आध्यात्मिक दृष्टि से देखते हुए कहा कि लोग मुझसे जूतियां बनवाने या जुड़वाने आते हैं किन्तु मुझे तो जोड़ना आता ही नहीं— *"चमरटा गांठि न जनई॥"* और न मेरे पास इसके योग्य औजार हैं। कई लोग जूतियां गांठते रहे हैं, मगर उन्हें कुछ नहीं प्राप्त हुआ। मुझे तो बिना प्रयास के सहज ही परमात्मा के दर्शन हो गये हैं— *"हउ बिनु गांठे जाइ पहूचा॥"* वे एक कुशल कारीगर थे किन्तु विनम्रता इतनी कि कोई श्रेय नहीं लिया और परमात्मा में ग़म कर अपना स्थान बनाया। भक्त कबीर जी ने भी श्रम और परमात्मा-भक्ति में संबंध स्थापित कर उसे श्रेष्ठता प्रदान की :

हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७६)

मनुष्य कोई भी काम करे किन्तु ध्यान को सदैव परमात्मा के साथ जोड़ कर रखे। इससे कार्य फलीभूत होता है और जीवन भी सार्थक होता है। वास्तव में मनुष्य जो भी कार्य कर रहा है वह परमात्मा की आज्ञा और इच्छा के अधीन कर रहा

है। परमात्मा ने जो कार्य सौंपा है वही मनुष्य कर रहा है। इसे उत्कृष्ट अथवा निकृष्ट मानना परमात्मा की व्यवस्था का अनादर है। सच्चा सिक्ख सदैव समभाव और समदृष्टि रखता है, मानव-मानव में कोई भेद किसी भी आधार पर नहीं करता है, वह जाति हो, वर्ण हो, लिंग हो अथवा कार्य। श्री गुरु रामदास जी ने इसे सुंदर अभिव्यक्ति प्रदान की है :

जे राजि बहाले ता हरि गुलामु घासी कउ हरि नामु कढाई॥

जनु नानकु हरि का दासु है हरि की वडिआई॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १६६)

मनुष्य राज-सिंहासन पर बैठ जाये अथवा खेत में घास काटता हो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यह परमात्मा की कृपा और हुक्म है। बस, इतना ही हो कि कोई भी अवस्था हो, मन में परमात्मा की श्रद्धा और प्रेम बना रहे। परमात्मा का जन होना ही मनुष्य की सबसे महान उपलब्धि और सम्मान का विषय है। श्री गुरु नानक साहिब अपने जीवन-काल में ही युगपुरुष स्थापित हो चुके थे। करतारपुर में सिक्ख संगत का तांता लगा रहता था। दूर-दूर से श्रद्धालु दर्शन के लिए आया करते थे। श्री गुरु नानक साहिब का अपना निर्धारित जीवन था। गुरु साहिब नित्य अपने खेतों में कृषि-कार्यों की निगरानी के लिए जाया करते थे और प्रभु-दरबार प्रातः व संध्या काल लगा करता था। श्री गुरु रामदास साहिब ने गुरुआई आसीन होने के बाद भी अमृत सरोवर की खुदाई के समय सिर पर मिट्टी की टोकरियां ढोई थीं। उनके साथ बाल-रूप श्री (गुरु) अरजन साहिब के भी सेवा में भाग लेने का उल्लेख इतिहास में मिलता है। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने जब श्री अकाल तख़्त साहिब के निर्माण का निर्णय लिया तो बाबा बुड्ढा जी और भाई गुरदास जी को साथ लेकर कर इसे निर्मित किया, जबकि दोनों ही गुरु-घर के सर्वोच्च सम्मानित सिक्खों में शामिल थे। बाबा बुड्ढा जी को श्री गुरु अंगद साहिब से लेकर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब तक गुरु साहिबान को गुरुता की रसम निभाने का सम्मान प्राप्त था, जबकि भाई गुरदास जी महान विद्वान थे।

सिक्ख धर्म में सेवा को विशेष महत्व प्रदान किया गया है। तन की सेवा के लिए मन में योग्य अवस्था का सृजन करना होता है। श्री गुरु अरजन देव जी का पावन फरमान है :

पवहु चरणा तलि ऊपरि आवहु ऐसी सेव कमावहु॥

आपस ते ऊपरि सभ जाणहु तउ दरगह सुखु पावहु॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८८३)*

सिक्ख के मन में पूर्ण समर्पण का भाव हो, चित्त विकारों से रहित, निर्मल और विनम्रता से भरपूर हो। वह सभी को अपने से श्रेष्ठ माने और अपने को दीन-हीन मान कर जीवन जीये अर्थात् किसी भी प्रकार के अहंकार से मुक्त हो। तभी वह सेवा के योग्य हो सकता है और परमात्मा की कृपा का अधिकारी बन सकता है। इसमें मानव-समानता का गहरा संदेश छिपा हुआ है। इस भावना से ही समाज में परस्पर समन्वय और सद्भाव स्थापित हो सकता है, एक दूसरे के सम्मान को एक दूसरे के श्रम के आदर को सुनिश्चित किया जा सकता है।

केश : गुरु की मुहर

*–डॉ. कशमीर सिंघ नूर**

दुनिया में जहां कहीं भी गुरु, पीर, फकीर, ऋषि, मुनि, साधु, संत, भक्त हुए हैं वे सभी केशधारी, साबित सूरत वाले हुए हैं। वे भजन-बंदगी में तल्लीन तो रहते ही थे, साथ ही अपने केशों (बालों) की संभाल भी किया करते थे। वे सभी केशों के महत्व तथा उपयोगिता से भली-भांति परिचित थे। जब बच्चा पैदा होता है तो सिर पर केश लिए ही पैदा होता है। बड़ा होने पर सिर के केश, दाढ़ी-मूंछ वगैरह काटकर या कटवाकर वाहिगुरु द्वारा दी गई साबित सूरत को क्यों बिगाड़ा जाए? बालों में शक्ति होती है, ताकत होती है, इस बात को स्वास्थ्य विज्ञान (मेडिकल साइंस) ने भी सही ठहराया है।

सिक्खों में रहित मर्यादा के तहत केश, कंघा, कड़ा, कृपाण और कछहिरा— इन पांच ककारों का बहुत महत्व है। केश शक्ति व ताकत का प्रतीक हैं। कंघे से केशों को संवारा जाता है। जब केशों में कंघा फेरा जाता है तो एक विशेष किस्म की ऊर्जा पैदा होती है, बशर्ते कि कंघा काठ का बना हुआ हो। इस ऊर्जा का संचार सिर से लेकर पाँव तक पूरे शरीर में होता है। यह सूक्ष्म अनुभव की बात है। लोहे से बना कड़ा पहनने से शरीर को बहुत लाभ मिलता है। शरीर के साथ रगड़ खाते रहने से लोहे के कड़े द्वारा नये लाल रक्त-कणों का निर्माण होता है। जो लोग लोहे के बर्तन में भोजन पकाते हैं, खाते हैं, उन्हें कभी खून की कमी नहीं होती है। वे एनीमिया का शिकार नहीं होते हैं।

कृपाण धारण करने से आत्मविश्वास बढ़ता है। अपनी व अन्य की मुश्किल समय में सुरक्षा करने की भावना सुदृढ़ होती है। कृपाण जुल्म, अत्याचार के विरुद्ध जूझने का, रणक्षेत्र में धर्म की खातिर कुर्बान होने का जज़्बा पैदा करती है। सिक्ख इतिहास साक्षी है कि यह मज़लूमों व असहाय लोगों की सुरक्षा भी करती रही है। कृपाणधारी सिक्खों को सदैव सत्कार मिला है और मिलता रहेगा। जिस पर वाहिगुरु की कृपा हो, उसे ही कृपाण धारण करने का मौका मिलता है। मुझे तो लगता है कि 'कृपा+आन' शब्द से ही 'कृपाण' शब्द बना है।

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००८, फोन : ९८७२२-५४९९०*

कछहिरा केवल नंगेज़ ढकने का वस्त्र मात्र नहीं है, यह तो जत्-सत् का भी प्रतीक है। कछहिरा हमें उच्च आचरण, सदाचार हेतु जत्-सत् प्रदान करता है, शक्ति देता है, प्रेरणा देता है।

पाँच ककारों में हमने केशों की शक्ति व ताकत की बात की है। यह बात बिल्कुल सही सिद्ध हो चुकी है कि केश काटने या कटवाने से शरीर में फासफोरस की कमी हो जाती है। इस कमी को पौष्टिक आहार या दवाओं द्वारा पूरा करना पड़ता है। जैसे-जैसे केश काटे जाते हैं, तैसे-तैसे उनकी पुन: बढ़ोत्तरी करने में फासफोरस की काफी खपत हो जाती है। अगर केशों को न काटा जाए तो शरीर में फासफोरस की कमी नहीं होती है। शरीर में प्रोटीन, कैल्शियम और शर्करा पचाने के लिए फासफोरस का होना बहुत जरूरी होता है। हमारा शरीर फासफोरस का इस्तेमाल इसके संयुक्त तत्वों के रूप में करता है। ये तत्व हमें दूध, पनीर, अनाजों, सूखे मेवों आदि से प्राप्त होते हैं। फासफोरस की कमी से शरीर का वज़न कम हो जाता है, खून की कमी हो जाती है और शरीर का पूर्ण व सही विकास नहीं हो पाता है। इससे पता चलता है कि फासफोरस हमारे लिए बहुत जरूरी है और केशों का हमारे लिए बहुत ज्यादा महत्व है।

केशों से और सिर पर सजी दसतार से सिक्ख पूरी दुनिया में अपनी अलग व विशेष पहचान बनाए हुए हैं तथा शान से 'सरदार' कहलाए जाते हैं। हां, कुछेक विदेशी मुल्कों में सियासत व रंजिश से ग्रस्त होकर सिक्खों की अलग पहचान के बारे में भ्रांतियां पैदा की जाती हैं। हमें विचलित नहीं होना चाहिए और अपने सिक्खी स्वरूप को कायम रखने के लिए हर कुर्बानी के लिए तैयार रहना चाहिए। यही सिक्खी की महान परंपरा रही है। हमारी अलग व विशेष पहचान ही हमारी गौरवशाली विरासत है। सिक्खी, सदाचार से, परोपकार की भावना से भरपूर फलसफा है। सिक्ख धर्म में केशधारी होकर जीने का और हंसते-हंसते सिक्खी-सिद्धांतों के लिए कुर्बान होने का एक अंदाज है, ढंग है। यूं ही तो नहीं कहा जाता है— "केश गुरु की मुहर हैं।" केश गुरु की कृपा भी हैं। सिक्खों का प्रथम सिद्धांत ही केशों की हिफाजत करना होता है। हमें अपने बच्चों को केशों की बेअदबी करने से रोकना चाहिए, उन्हें पतित होने से बचाना चाहिए तथा साबित सूरत बनाना चाहिए। हमारे कौमी शहीदों ने शहादत देकर सिक्खी की आन, बान और शान को कायम रखा है।

प्रतिदिन इन शहीदों को अरदास करते समय याद किया जाता है —"जिन्हां सिंघां-सिंघनियां ने धर्म हेत सीस दित्ते, बंद-बंद कटाए, खोपरियां लुहाइयां, चरखड़ियां ते चढ़े, आरियां नाल चिराए गए, गुरदुआरिआं लई कुर्बानियां कीतिआं, धर्म नहीं हारिआ, सिक्खी केसां-श्वासां संग निभाई, तिन्हां दी कमाई दा ध्यान धरके खालसा जी! बोलो जी वाहिगुरु!"

वाहिगुरु के आगे केशों का दान मांगते हुए अरदास की जाती है— "सिक्खां नूं सिक्खी दान, केस दान, रहित दान, बिबेक दान, विसाह दान, भरोसा दान, दानां सिर दान, नाम दान, श्री अमृतसर जी दे स्नान, चौंकियां, झण्डे, बुंगे जुगो जुग अटल, धर्म का जयकार, बोलो जी वाहिगुरु!"

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी दुनिया के महान मनोविज्ञानी गुरु हैं, जिन्होंने हर चीज़ का सही इस्तेमाल करना सिक्खों को सिखाया है। गुरु जी का 'पांच ककार' रखने का सिक्खों को आदेश देना वक्त की जरूरत नहीं, बल्कि इसे हर समय के लिए जरूरी कर दिया गया। केशों का सीधा संबंध जत्थेबंदी के गठन के साथ भी है। केशों ने सिक्ख जत्थेबंदी को बचाए रखा है और अब तक बचाए हुए है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने केश एक ऐसी कसौटी के रूप में दिए हैं, जिससे पता चल जाता है कि कौम की यथास्थिति क्या है। केशों को खूबसूरती का 'आखिरी चिन्ह' कहा गया है। जिस स्थान पर खालसा पंथ की सृजना की गई, उस स्थान को 'केसगढ़ साहिब' कहा जाता है।

जिनके सिर पर बाल न हों, वे स्त्री-पुरुष इनके लिए तरस जाते हैं और कई तरह के इलाज इन्हें पाने (उगाने) हेतु करवाते हैं।

बात की बात, मानना होगा कि केश प्राकृतिक देन हैं, प्राकृतिक सुंदरता हैं, जो मनुष्य की बनावट में चार चाँद लगाने का कार्य करते हैं। हमें केशों की हर हाल में हिफाजत करनी चाहिए तथा उनकी वृद्धि, विकास में रोढ़ा नहीं बनना चाहिए।

कामि करोधि नगरु बहु भरिआ . . .

*–डॉ. मनजीत कौर**

मानव शरीर पाँच तत्वों से निर्मित है। इस पंच भौतिक ढांचे में ईश्वरीय अंश 'आत्मा' का निवास है। गुरबाणी-प्रमाण है :

पंच ततु मिलि इहु तनु कीआ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १०३९)

अर्थात् यह शरीर हवा, पानी, अग्नि, धरती तथा आकाश के संयोग से बना है। साथ ही इस शरीर में पाँच जज़्बात (भावनाएं) भी विद्यमान हैं। अगर इन जज्बातों को सही दिशा-निर्देश न मिले तो ये अनियंत्रित होकर विकार का रूप धारण कर लेते हैं। ये पांच हैं— काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार। बेशकीमती मानव जीवन की सार्थकता हेतु इन पर नियंत्रण अत्यावश्यक है, क्योंकि अगर आवश्यकता पड़ने पर इन पर लगाम न कसी जाए तो ये विकार के नाम से जाने जाते हैं और मनुष्य का जीवन बर्बाद कर देते हैं। फिर इन विकारों का विष अंदर ही अंदर गुणों को भी नष्ट कर देता है। इस संदर्भ में श्री गुरु नानक देव जी का पावन उपदेश है :

अवरि पंच हम एक जना किउ राखउ घर बारु मना॥

मारहि लूटहि नीत नीत किसु आगै करी पुकार जना॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १५५)

अर्थात् हे मेरे मन! अन्य विकार तो पाँच हैं और मैं अकेला हूँ। इनसे अपने गुणों रूपी (अनमोल) गहनों को कैसे बचाऊँ? हे भाई! ये हर रोज मारते हैं, लूटते हैं। मैं किसके आगे पुकार करूं अर्थात् गुहार लगाऊँ?

इस संदर्भ में भक्त रविदास जी ने एक सुंदर दृष्टांत देकर समझाया है कि विविध जीवों में एक-एक दोष है अर्थात् विकार है और वही विकार उस जीव की मृत्यु का कारण बन जाता है। विचार करो, उस इंसान की क्या दशा होगी, जिसका इन पाँचों पर नियंत्रण नहीं है :

म्रिग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर एक दोख बिनास॥

पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८६)

अर्थात् हिरण को श्रवण रस, मछली को जिह्वा का स्वाद, भंवरे की सूंघने की वृत्ति, पतंगे को देखने का शौक तथा हाथी को काम-रस। मनुष्य में ये पाँचों विकार मौजूद हों तो उसके बचने की क्या आशा की जा सकती है।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या इन विकारों के विष से बचना मुमकिन है? चिन्तकों के चिन्तनानुसार इनसे पूर्णतया मुक्ति तो संभव नहीं है, लेकिन गुरबाणी आशयानुसार जीवन बना कर इन विकारों पर विजय पाई जा सकती है :

अवर जोनि तेरी पनिहारी॥

इसु धरती महि तेरी सिकदारी॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३७४)

अगर शेष समस्त योनियां मनुष्य की सेवा में

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

हाजिर हैं और मनुष्य स्वयं इन विकारों का गुलाम हो जाए तो सोचो, मनुष्य की हुकूमत किस पर और कैसे चलेगी? वस्तुत: ये विकार जन्म-जन्मांतरों से जीव के अंदर संस्कार रूप में इस तरह बस गए हैं कि मनुष्य इन्हें अपना मित्र-बंधु तथा हितैषी समझने लगा है। गुरबाणी में स्पष्ट हिदायत है :

जनम जनम की इसु मन कउ मलु लागी काला होआ सिआहु॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६५१)

अब सवाल यह उठता है कि जन्म-जन्म से विकारों से मलिन हुए मन को उज्जवल अर्थात् निर्मल व पवित्र कैसे करें? उत्तर भी गुरबाणी में ही उपलब्ध है। श्री गुरु नानक देव जी 'जपु जी साहिब' में रोजमर्रा के जीवन के क्रिया-कलापों द्वारा इस गूढ़ तथ्य को समझाते हैं कि जब शरीर का कोई अंग मिट्टी, धूल आदि से भर जाए तो वह पानी से धोने पर साफ हो जाता है। वस्त्र आदि मैला हो जाए तो वह साबुन आदि से धोने पर साफ हो जाता है। मगर मनुष्य की बुद्धि पापों अर्थात् विकारों की मलिनता से भर जाए तो वह किसी साबुन अथवा डिटर्जेंट से निर्मल नहीं हो सकती। वह तो केवल प्रभु-नाम-सुमिरन द्वारा ही पवित्र हो सकती है।

श्री गुरु अरजन देव जी जीव को सुचेत करते हैं कि छ: शास्त्रों का भली-भांति पठन-पाठन करने वाले सुंदर, सुघड़, स्वरूपवान तथा सूझवान चारों वर्णों व्यक्तियों को भी पाँच विकारों ने अपनी ओर आकर्षित कर उन्हें छल लिया है। गुरु जी का प्रश्न है कि ऐसा कौन बलशाली है, जिसने इस 'पाँच शूरवीरों' को पकड़ कर मार डाला है? फिर गुरु जी स्वयं ही जवाब देते हुए समझाते हैं कि जो इन पाँचों विकारों को मार कर, परास्त कर अपना जीवन-यापन करता है, वही इस कलियुग में पूर्ण पुरुष है :

चारि बरन चउहा के मरदन खटु दरसन कर तली रे॥
सुंदर सुघर सरूप सिआने पंचहु ही मोहि छली रे॥१॥
जिनि मिलि मारे पंच सूरबीर ऐसो कउनु बली रे॥
जिनि पंच मारि बिदारि गुदारे सो पूरा इह कली रे॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४०४)

अब प्रश्न यह उठता है कि आखिर जीव इन विकारों के दुष्टपरिणाम जानते हुए भी निरंतर इस दलदल में क्यों धंसता जाता है और अपना बेशकीमती जीवन बर्बाद कर लेता है? गुरबाणी आशयानुसार जीव परिणाम जानते हुए भी इस ओर से आँखें मूंद कर बैठा है। इंसानी फितरत है— "इह जग मिट्ठा! अगला किन्न डिट्ठा?" अर्थात् इसी संसार में 'मौज' कर लो, आगे किसने देखा है? इस गलतफहमी को दूर करते हुए श्री गुरु नानक देव जी ने 'जपु जी साहिब' में समझाया है कि ये पुण्य और पाप-कर्म केवल कहने मात्र के लिए ही नहीं हैं बल्कि अपने कर्मों रूपी संस्कारों को जीव अपने साथ उकेर कर ले जाएगा। फिर उन कर्मों का लेखा-जोखा उस मालिक की दरगाह में होगा और उनका फल भी जीव को स्वयं ही भोगना पड़ेगा। विष रूपी कर्म-बीज बोकर कोई अमृत रूपी फल की अभिलाषा करे तो यह मुमकिन नहीं। लोक-प्रचलित कहावत है— "बोए पेड़ बबूल का आम कहां से होए!" गुरबाणी में इस संदर्भ में कितना सटीक समझाया गया है :

कपड़ु रूपु सुहावणा छडि दुनीआ अंदरि जावणा॥
मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावणा॥
हुकम कीए मनि भावदे राहि भीड़ै अगै जावणा॥
नंगा दोजकि चालिआ ता दिसै खरा डरावणा॥

करि अउगण पछोतावणा॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७०)

प्रत्येक वह कर्म, जिससे हमारा हृदय और बुद्धि जुड़ी हो, उसका संस्कार बनना शुरू हो जाता है। बार-बार उन्हीं कर्मों को दोहराते हुए संस्कार स्वभाव में परिवर्तित हो जाते हैं तथा स्वभाव को बदलना नामुमकिन नहीं तो अति कठिन अवश्य है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी से दिशा-निर्देश लेकर अपना जीवन रूपान्तरित करने का प्रयास करें ताकि इन विकारों पर विजय प्राप्त की जा सके, शुभ कर्मों के प्रति उत्साह बना रहे और जीव को सहजता से इन विकारों से मुक्ति मिले।

गुरबाणी आशयानुसार विषय-विकारों पर विजय प्राप्त की जा सकती है इन्हें गुणों में रूपान्तरित करके :—

काम को संयम द्वारा
क्रोध को शूरवीरता द्वारा
लोभ को संतोष द्वारा
मोह को प्रेम द्वारा
अहं को विनम्रता द्वारा

अपने विषयानुसार इस आलेख में विचार करते हैं कि 'काम' और 'क्रोध' रूपी विकार पर विजय कैसे पाई जा सकती है?

काम : काम अर्थात् भोग-विलास की बढ़ी हुई इच्छा। श्री गुरु अरजन देव जी ने इस विकार का इस प्रकार उल्लेख किया है और इसके दुष्परिणामों से अवगत करवा कर कलियुगी जीवों को इससे बचने का सफल उपाय भी बताया है। श्री गुरु अरजन देव जी का पावन फरमान है :

हे कामं नरक बिस्रामं बहु जोनी भ्रमावणह॥
चित हरणं त्रै लोक गंम्यं जप तप सील बिदारणह॥
अलप सुख अवित चंचल ऊच नीच समावणह॥
तव भै बिमुंचित साध संगम ओट नानक नाराइणह॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३५८)

भक्त कबीर जी काम की तुलना चोर से करते हुए स्पष्ट करते हैं कि यह काम रूपी चोर हृदय-घर से ज्ञान रूपी रत्न चुरा लेता है :

इसु तन मन मधे मदन चोर॥
जिनि गिआन रतनु हिरि लीन मोर॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११९४)

श्री गुरु रामदास जी इस संदर्भ में मानव शरीर को एक शहर मानते हुए इस तथ्य को उजागर करते हैं कि यह शरीर रूपी शहर काम-क्रोध आदि विषय-विकारों से भरा पड़ा है और इससे बचने का एक ही उपाय है— ईश्वरीय प्रेम से सराबोर संत-जनों की संगत करना :

कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू खंडल खंडा हे॥
पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइआ मनि हरि लिव मंडल मंडा हे॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १७१)

जिस मनुष्य को पूर्व के कर्मों के संयोग द्वारा पूर्ण गुरु मिल जाता है तो उसकी ईश्वर के चरणों में लिव जुड़ जाती है। फलस्वरूप इस शरीर रूपी शहर से कामादिक विकारों का जोर नष्ट हो जाता है।

इंसान हर पाप-कर्म पर्दे में रहकर करना पसंद करता है, ताकि कोई देख न पाए। लेकिन, प्रभु की दरगाह में उसके पाप-कर्मों पर कौन पर्दा डालेगा? वैसे भी ईश्वर तो अंतर्यामी है, उससे कैसा पर्दा! पंचम पातशाह इस संदर्भ में मनुष्य को

सुचेत करते हैं :

देइ किवाड़ अनिक पड़दे महि पर दारा संगि फाकै॥
चित्र गुपतु जब लेखा मागहि तब कउणु पड़दा तेरा ढाकै॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६१६)

पर-धन, पर-नारी पर कुदृष्टि डालने वालों को हिदायत है गुरबाणी में कि इस मन को गुरु-शब्द रूपी अंकुश की नितांत आवश्यकता है, जैसे मस्त हाथी को महावत के अंकुश की जरूरत होती है। श्री गुरु रामदास जी का पावन फरमान है :

मन गुरमति चाल चलावैगो॥
जिउ मैगलु मसतु दीजै तलि कुंडे गुर अंकसु सबदु द्रिड़ावैगो॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३१०)

सिक्ख मिशनरी कॉलेज (लुधियाना) द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'सिक्ख धर्म फिलासफी' में इस संदर्भ में एक प्रश्न उठा कर उसका बड़ा सुंदर एवं सटीक-जवाब दिया गया है जो यहाँ उल्लेखनीय है— "क्या काम मारा जा सकता है? नहीं। जब तक शरीर कायम है, काम, क्रोध आदि विकार उसमें रहेंगे ही। बहुत-से तपस्वी साधकों तथा ऋषियों ने एकांतवास द्वारा आकधतूरा आदि खाकर इसे मारने का प्रयास किया है, परंतु उन्हें सफलता नहीं मिली। सिक्ख धर्म में इन जज्बातों को मारने पर बल नहीं दिया है, बल्कि इन्हें नियंत्रित रखने तथा सही प्रयोग में लाने की शिक्षा दी गई है। यदि रथ के घोड़ों को मार दिया जाए या घोड़ों को कमजोर कर दिया जाए तो रथ किसी लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकता। घोड़ों को मारने के स्थान पर उन्हें नियंत्रण में रखते हुए आगे बढ़ते रहने की आवश्यकता है।"

काम के संशोधित रूप हेतु सिक्ख धर्म में गृहस्थ धर्म अपनाने का प्रावधान है तथा जहाँ स्त्री को पतिव्रता होने का संदेश है तो पुरुष हेतु "एका नारी जती होइ, पर नारी धी भैण वखाणै" का आदेश है। यही नहीं, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की सृजना के वक्त खालसा के लिए पर-नारी-गमन या पर-पुरुष-गमन को मुख्य कुरहित में शामिल कर अपने सिक्खों को उपदेश दिया है :

पर बेटी को बेटी जानै।
पर स्त्री को मात बखानै।
आपनि स्त्री सों रति होई।
रहतवंत सिंघ है सोई॥१३॥

(रहितनामा : भाई देसा सिंघ)

इस प्रकार काम को संयम द्वारा वशीभूत कर उसे स्वयं पर हावी नहीं होने देना है।

क्रोध : क्रोध चंडाल एवं प्रचंड रूप धारण किए रहता है। जैसे आग का स्वभाव है जलाना, ठीक उसी तरह क्रोध रूपी अग्नि सद्गुणों को जलाकर राख कर देती है। वास्तव में क्रोध वो अंगारे हैं जो पहले क्रोधी व्यक्ति को जलाते हैं और फिर जिस पर क्रोध किया जाता है उसको हानि पहुंचाते हैं। क्रोध आने पर इंसान अक्सर अपना होशो-हवास खो बैठता है। क्रोधी व्यक्ति को अपने-पराए, छोटे-बड़े की तहजीब नहीं रहती। वह क्रोध में कुछ भी कर बैठता है। उसका न तो कर्मेन्द्रियों पर और न ही ज्ञानेन्द्रियों पर नियंत्रण रहता है। गुरबाणी में ऐसे लोगों के निकट न जाने का उपदेश दिया गया है :

ओना पासि दुआसि न भिटीऐ जिन अंतरि क्रोधु चंडाल॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४०)

जब क्रोध विकराल रूप धारण कर लेता है तो इंसान अपना विवेक खो बैठता है, बुद्धि काम करना

बंद कर देती है, अंत:करण निर्बल हो जाता है। क्रोधी व्यक्ति कदाचित शांत व सुखी नहीं रह सकता। क्रोधी व्यक्ति का समाज में कोई मान-सम्मान नहीं होता और न ही उसका कोई सच्चा मित्र। गुरबाणी-प्रमाण है कि मीठे बोल भाईचारा, प्रेम, सद्भाव आदि बढ़ाते हैं तथा इसके विपरीत कटु वचन प्रेम और भ्रातृभावना को नष्ट करने वाले साबित होते हैं। श्री गुरु नानक देव जी की पावन बाणी का संदेश है :

गंढु परीती मिठे बोल॥. . .
सिफती गंढु पवै दरबारि॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४३)

श्री गुरु नानक पातशाह ने मिष्ट-भाषा एवं विनम्रता को हृदय से धारण करने को समस्त गुणों का सार बताते हुए पावन फरमान किया है :

मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७०)

इंसानी फितरत है कि दूसरों के गुणों को अवगुण समझना और अपने अवगुणों को गुण समझना। दूसरों की उन्नति से ईर्ष्या करते हुए द्वेष एवं वैर-विरोध रखना तथा क्रोधी स्वभाव द्वारा दूसरों को किसी ढंग से नीचा दिखाने अथवा गिराने की कोशिश में लगे रहना। इस आशय के विपरीत बाणी हमें यह संदेश देती है कि हमें तो बुरा करने वालों का भी भला ही सोचना है, क्योंकि सबके कर्मों का लेखा-जोखा ईश्वर के पास होना है। बाबा शेख फरीद जी ने इस संदर्भ में क्या खूब समझाया है!

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ॥
देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३८१)

यही नहीं, उन्होंने तो अपनी बाणी में यहाँ तक समझाया है कि हे इंसान! ईश्वर ने तुझे अक्ल दी है, बुरे कर्म करना छोड़ दे! अपने अन्त:करण में झांक कर देख! दूसरों के अवगुण देखने की बजाय अपने गुनाह देख और उनसे तौबा कर :

फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख॥
आपनड़े गिरीवान महि सिरु नींवां करि देखु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७८)

ईश्वर ने हमें शक्ति दी है, उर्जा दी है। उसे क्रोध द्वारा नष्ट न करें, अपितु दुखियों, मजलूमों की सहायता करने में लगा कर अपना बेशकीमती जीवन सार्थक करें! क्रोध को शूरवीरता में रूपान्तरित कर लोकहित में कार्य किए जाने चाहिए!

अंत में यही गुजारिश करना चाहूंगी कि हमें संयमी जीवन व्यतीत करते हुए, गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए सत्साहित्य पढ़ने में रुचि बढ़ानी होगी। गुरबाणी आशयानुसार चिंतन-मनन, सत्संगति करते हुए सादा जीवन और उच्च विचारों से "मनि जीतै जगु जीतु" के पावन सिद्धांत से अपने अमूल्य जीवन को सार्थक बनाने का प्रयास निरंतर करते हुए परोपकारी एवं निर्मल हृदय से 'सरबत्त के भले' की अरदास करनी होगी, ताकि कलियुगी प्रसार में ये मनोभाव, विकार बनकर मानवता पर हावी न हो सकें!

ख़बरनामा

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा
श्री गुरु नानक देव अस्पताल में मरीज़ों के लिए लंगर-सेवा की गई शुरू

श्री अमृतसर साहिब : २७ मार्च : श्री गुरु नानक देव अस्पताल श्री अमृतसर साहिब में इलाज करवाने आए मरीज़ और उनके सहयोगी अब श्री गुरु रामदास जी के दर-घर से आया लंगर छक सकेंगे। लंगर-सेवा की रस्मी शुरूआत शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी द्वारा मूलमंत्र व गुरमंत्र का जाप एवं अरदास कर की गई। ज़िक्रयोग्य है कि बीते समय में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की कार्यकारिणी ने इस कार्य के लिए प्रवानगी दी थी। श्री गुरु नानक देव जी अस्पताल पहुँचने पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट धामी का अस्पताल के डायरेक्टर प्रिंसिपल डॉ. राजीव देवगन व मेडिकल सुप्रिंटेंडेंट डॉ. करमजीत सिंघ ने स्वागत किया।

इस अवसर पर बात करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी गुरु साहिबान के संदेश और प्रेरणा की रौशनी में सदा ही मानव-कल्याण के कार्यों के लिए यत्नशील रही है। इसी के अंतर्गत श्री गुरु नानक देव अस्पताल में इलाज करवाने वाले मरीज़ों व अन्य ज़रूरतमंदों के लिए लंगर का प्रबंध करने का फ़ैसला किया गया है। उन्होंने कहा कि इसका मुख्य उद्देश्य मरीज़ों व उनके सहयोगियों को सहारा प्रदान करना है। एडवोकेट धामी ने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का यह प्रयास दूर-दूर से श्री अमृतसर साहिब में इलाज करवाने आए मरीज़ों के लिए बड़ा आश्वासन बनेगा। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने इस कार्य में सहयोग करने के लिए अस्पताल के डायरेक्टर प्रिंसिपल व मेडिकल सुप्रिंटेंडेंट सहित समूचे प्रबंध का धन्यवाद भी किया।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य स. गुरमीत सिंघ बूह, ओएसडी स. सतबीर सिंघ, सचिव स. बलविंदर सिंघ काहलवां व स. गुरिंदर सिंघ मथरेवाल, निजी सचिव स. शाहबाज सिंघ, उप सचिव स. हरभजन सिंघ वक्ता, श्री दरबार साहिब के मैनेजर स. भगवंत सिंघ धंगेड़ा, एडिशनल मैनेजर स. बिकरमजीत सिंघ झंगी, स. बलविंदर सिंघ सहित कई गणमान्य उपस्थित थे।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के बजट इजलास के दौरान
सिक्ख मामलों के सम्बंध में पारित किये गए कई अहम प्रस्ताव

श्री अमृतसर साहिब : २८ मार्च : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सालाना बजट इजलास के दौरान कई अहम प्रस्तावों को प्रवानगी दी गई। इनमें सिक्खों की मौलिक व अलग पहचान को धुंधला करने की हो रही कोशिशों के प्रति गंभीर चिंता प्रकट करते हुए ऐसी साजिशों के विरुद्ध एकजुट होने की अपील

करने, पंजाब सरकार द्वारा धार्मिक ग्रंथों के विरुद्ध अपराध रोकथाम बिल— २०२५ के सम्बन्ध में अपनाई जा रही पहुँच और मुख्यमंत्री द्वारा दिए जा रहे बयानों से पैदा हो रहे भ्रम, भाई बलवंत सिंघ राजोआणा की सज़ा-तबदीली और बंदी सिंघों की रिहाई की माँग, एआई के दुरुपयोग पर चिंता प्रकट करने के साथ-साथ विभिन्न राज्यों में परीक्षा के दौरान सिक्ख विद्यार्थियों को ककार उतारने के लिए मजबूर करने, पंजाब में नौजवानों के बढ़ रहे पुलिस मुकाबलों पर चिंता प्रकट करने, गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब श्री करतारपुर साहिब पाकिस्तान का रास्ता पुन: खोलने और विदेशों में सिक्खों की समस्याओं को सुलझाने के लिए भारत सरकार को प्रभावशाली कदम उठाने की अपील करने के अलावा कई प्रस्ताव शामिल हैं।

पारित किये गए मुख्य प्रस्ताव के माध्यम से सिक्ख कौम के महान इतिहास, अटल सिद्धांतों और विलक्षण धार्मिक परंपराओं को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर नीतिगत मसौदे के अंतर्गत सिक्खों की मौलिक और अलग पहचान को धुंधला करने की हो रही कोशिशों के प्रति गंभीर चिंता प्रकट की गई। प्रस्ताव में कहा गया कि ऐसी हरकतें केवल सिक्ख कौम की अलग पहचान को निशाना बनाने तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि ये सिक्ख धर्म की पवित्रता, आज़ाद हस्ती और मानवता को प्रदान किये उसके उच्च आदर्शों के लिए भी सीधी चुनौती हैं। यह घटनाक्रम अल्पसंख्यकों के प्रति बहुसंख्यक कौमों की धार्मिक संस्थाओं के नेताओं के साथ-साथ ऐसी विचारधारा वाले लोगों द्वारा सोशल मीडिया पर परोसी जा रही नीतियों से सम्बन्धित है। प्रस्ताव में कहा गया कि सिक्ख कौम एक अलग और स्वतंत्र धार्मिक कौम है। इसका अपना महान इतिहास, विलक्षण दर्शन, अनोखे सिद्धांत, जीवन-मूल्य, त्योहार, रहन-सहन और मर्यादा है। सिक्ख धर्म में सत्य, न्याय, समानता, भाईचारे और सेवा के उच्च आदर्श हैं, इसलिए सिक्खों की मौलिक एवं अलग हस्ती को धुंधला करने वाली हर विचारधारा को रद्द करते हुए समूह सिक्ख संस्थाओं, विद्वानों व विश्व भर की संगत से अपील की कि सिक्ख धर्म की मौलिकता, पवित्रता व विलक्षण अस्तित्व को मुख्य रखते हुए, सदा जागरूक रहते हुए साजिश के हर विरुद्ध एकजुटता के साथ आवाज़ बुलंद की जाये।

एक अन्य अहम प्रस्ताव के माध्यम से पंजाब सरकार की तरफ से 'पंजाब पवित्र धार्मिक ग्रंथों के विरुद्ध अपराधों की रोकथाम बिल– २०२५' के सम्बन्ध में अपनाई जा रही पहुँच तथा मुख्यमंत्री द्वारा दिए जा रहे बयान से संगत में भ्रम पैदा होने का ज़िक्र करने के साथ-साथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बेअदबी के लगातार बढ़ रहे मामलों के प्रति गंभीर चिंता प्रकट की गई। प्रस्ताव में कहा गया कि राजसी पार्टियों ने इस मामले पर सरकार बनाने के लिए राजनीति तो की, परन्तु संगत की भावनाओं का प्रतिनिधित्व न कर सकीं। पंजाब की मौजूदा सरकार के समय के दौरान बेअदबी के असंख्य मामले सामने आए हैं, परंतु न तो उनकी पूरी जांच की गई और न ही दोषियों को सज़ा मिली। सरकार की ढीली कारगुज़ारी के कारण दोषी बच कर निकल रहे हैं। प्रस्ताव में मौजूदा पंजाब सरकार की ग़ैर-संजीदगी की बात करते हुए बेअदबी रोकने के लिए सख़्त कानून बनाने के लिए की जा रही

कार्यवाही को मात्र औपचारिकता और मनमर्ज़ी की कार्यवाही करार दिया गया। कहा गया कि सरकार की सिलेक्ट कमेटी की तरफ से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी से सुझाव तो माँगे गए, परन्तु जब शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा गठित कमेटी ने सरकार को कई पत्र भेज कर आवश्यक जानकारी माँगी तो सरकार ने वह जानकारी देना मुनासिब नहीं समझा। दूसरी तरफ़ पंजाब के मुख्यमंत्री द्वारा अखबारी बयानों के अनुसार 'जागत-जोति श्री गुरु ग्रंथ साहिब सत्कार एक्ट— २००८' जो कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की छपाई से सम्बंधित है, में संशोधन की बात करने से और भी सवाल पैदा हुए हैं। प्रस्ताव में इस अहम मामले के प्रति माँग की गई कि बेअदबी की घटनाएँ रोकने के लिए पंजाब सरकार द्वारा बिल को लेकर संगत की भावनाओं को सुनिश्चित किया जाए और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से माँगी गई सभी जानकारियां तुरंत मुहैया करवाई जाएं। यह भी कहा गया कि 'जागत-जोति श्री गुरु ग्रंथ साहिब सत्कार एक्ट— २००८' के साथ कोई छेड़छाड़ न की जाये।

एक अन्य प्रस्ताव के माध्यम से करीब तीन दशक से जेलों में नज़रबंद सिंघों की रिहाई के लिए सिक्ख कौम द्वारा लगातार उठाई जा रही माँग के प्रति केंद्र एवं राज्य सरकारों के अड़ियल व पक्षपाती रवैये की कड़ी निंदा की गई। प्रस्ताव में कहा गया कि भाई बलवंत सिंघ राजोआणा की सज़ा-तबदीली के लिए डाली गई पटीशन को १४ वर्ष बीत गए हैं, परंतु सिक्ख भावनाओं के साथ जुड़े इस गंभीर मामले के प्रति अपनाई जा रही पहुँच सरकार की नीति और नीयत पर बड़े सवाल पैदा करती है।

श्री गुरु नानक देव जी के ५५०वें प्रकाश पर्व के अवसर पर भारत सरकार ने भाई बलवंत सिंघ राजोआणा की सज़ा-तबदीली तथा अन्य बंदी सिंघों की रिहाई का एलान किया था, मगर उसे लागू नहीं किया गया। भाई बलवंत सिंघ राजोआणा, जो फांसी की चक्की में लंबे समय से सज़ा काट रहे हैं, उनके साथ किया जा रहा ऐसा भेदभाव समूची कौम को पीड़ा प्रदान करने वाला है। प्रस्ताव में माँग की गई कि भाई बलवंत सिंघ राजोआणा से सम्बन्धित पटीशन को केंद्र सरकार और न लटकाए तथा 'हाँ' या 'न' में तुरंत फ़ैसला करे।

इस प्रस्ताव में दिल्ली की भाजपा सरकार द्वारा भाई दविंदरपाल सिंघ (भुल्लर) के मामले में किये जा रहे भेदभाव की भी निंदा की गई। कहा गया कि पहले आम आदमी पार्टी की केजरीवाल सरकार इसमें रुकावट बनती रही और अब भाजपा की सरकार भी उसी मार्ग पर चल रही है। प्रस्ताव में भाजपा के सिक्ख नेताओं की ख़ामोशी पर भी सवाल उठाए गए। इसके साथ ही लंबे समय से जेलों में नज़रबंद भाई गुरदीप सिंघ खेड़ा, भाई जगतार सिंघ हवारा, भाई परमजीत सिंघ भिउरा, भाई जगतार सिंघ तारा सहित अन्य सिंघों की तुरंत रिहाई की भी माँग की गई।

एक अन्य प्रस्ताव में एआई तकनीक का दुरुपयोग कर सिक्खों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाली एतराज़योग्य सामग्री के प्रसार पर चिंता प्रकट करते हुए इसकी रोकथाम के लिए भारत सरकार को एक ठोस नीति बनाने के लिए कहा गया। प्रस्ताव के माध्यम से केंद्र सरकार से अपील की गई

कि एआई के दुरुपयोग को रोकने के लिए सख़्त और उपयुक्त नीति बनाई जाये तथा ऐसे मामलों में तुरंत कार्रवाई को सुनिश्चित किया जाए। इस सम्बंध में केंद्र सरकार द्वारा राज्य सरकारों को भी सख़्त आदेश जारी किये जाएँ।

एक अन्य प्रस्ताव के माध्यम से देश के राज्यों में परीक्षाओं के दौरान सिक्ख विद्यार्थियों को ककार उतारने के लिए मजबूर करने की घटनाओं पर दुख प्रकट किया गया। कहा गया कि सिक्खों के लिए ककारों की महत्ता से अवगत होने के बावजूद भी अक्सर ही प्रतियोगी परीक्षाओं के समय सिक्ख विद्यार्थियों को परेशान किया जाता है। इसके साथ सिक्ख भावनाएं आहत होने के साथ-साथ विद्यार्थियों की परीक्षा पर भी प्रभाव पड़ता है। माँग की गई कि यदि कोई व्यक्ति सिक्ख विद्यार्थियों को परीक्षा के दौरान ककार उतारने के लिए मजबूर करे तो उसके ख़िलाफ़ कार्रवाई को यकीनी बनाया जाये।

एक और प्रस्ताव के माध्यम से पंजाब में नौजवानों के बढ़ रहे पुलिस मुकाबलों पर चिंता प्रकट की गई। प्रस्ताव में कहा गया कि पंजाब में पैदा किया जा रहा यह रुझान न केवल कानून-व्यवस्था पर सवाल खड़े करता है, बल्कि समाज में डर और असुरक्षा का माहौल भी पैदा करता है, इसलिए पुलिस मुकाबलों के नाम पर हो रही घटनाओं की पूरी पारदर्शिता एवं न्यायपूर्ण जांच होनी चाहिए, ताकि सच्चाई सामने आ सके और किसी भी तरह की बेइन्साफ़ी को रोका जा सके।

एक अन्य प्रस्ताव के माध्यम से गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब, श्री करतारपुर साहिब (पाकिस्तान) का रास्ता पहले की तरह तुरंत खोले जाने की माँग की गई। प्रस्ताव में कहा गया कि दोनों देशों में तल्खी होने के कारण यह रास्ता बंद होने से सिक्ख संगत की आस्था को चोट पहुंच रही है। दोनों देशों की सरकारों द्वारा सिक्ख संगत की भावनाओं को समझते हुए यह रास्ता तुरंत खोला जाये।

एक अन्य प्रस्ताव के माध्यम से विदेशों में बसते सिक्खों की समस्याओं को दूर करने के लिए भारत सरकार को तुरंत प्रभावशाली कदम उठाने की अपील की गई। प्रस्ताव में केंद्र सरकार से कहा गया कि केंद्र सरकार देश-दुनिया में सिक्खों के धार्मिक अधिकारों व मर्यादा को निभाने की आज़ादी की रक्षा हर हाल में यकीनी बनाए। इसके मद्देनज़र सरकार विदेशों में बसते सिक्खों के साथ किसी भी तरह की नसली हिंसा, भेदभाव रोकने के लिए कूटनीतिक यत्न करे।

एक अन्य प्रस्ताव के माध्यम से मीरी पीरी मेडिकल कॉलेज, शाहबाद मारकंडा (हरियाणा) पर जबरन कब्ज़ा करने की कोशिश की भी सख़्त शब्दों में निंदा की गई। प्रस्ताव में कहा गया कि सिक्ख संस्था को कमज़ोर करने वाली ऐसी हरकतें बरदाश्त नहीं की जाएंगी।

इसके अलावा शोक प्रस्ताव में बाबा सुच्चा सिंघ कारसेवा किला अनंदगढ़ साहिब, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य स. अमीर सिंघ रसीदां, पूर्व सदस्य जत्थेदार सुरजीत सिंघ (चीमा), स. बीर सिंघ तथा स. संतोख सिंघ खीरांवाली के निधन पर मूलमंत्र व गुरमंत्र का जाप कर उन्हें श्रद्धांजलि भेंट की गई।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से अमृतधारी बच्चों को २ करोड़ २८ लाख रुपए के वज़ीफ़े जारी किए गए

श्री अमृतसर साहिब : १ अप्रैल : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की शैक्षणिक संस्थाओं में पढ़ रहे ३७४३ अमृतधारी विद्यार्थियों को धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से सत्र २०२५–२०२६ के लिए २ करोड़ २८ लाख ९८ हज़ार ५०० रुपए की वज़ीफ़ा राशि आवंटित की गई। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय में वज़ीफ़ा राशि के चेक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने शैक्षणिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों को सौंपे।

इस अवसर पर एडवोकेट धामी ने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सिक्खी के प्रचार-प्रसार के लिए हमेशा कार्यशील रही है। जहाँ देश भर में गुरमति समागमों के माध्यम से सिक्खी-प्रचार किया जाता है, वहां धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रबंधाधीन शैक्षणिक संस्थाओं के अमृतधारी विद्यार्थियों के लिए वज़ीफ़ा राशि देने की योजना भी चलाई जा रही है। इसके अंतर्गत हर साल अमृतधारी विद्यार्थियों को उनकी फ़ीस के लिए करोड़ों रुपए वज़ीफ़े के तौर पर दिए जाते हैं। उन्होंने बताया कि इसके अलावा धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से प्रत्येक वर्ष धार्मिक परीक्षा के माध्यम से भी विशेष तौर पर वज़ीफ़े दिए जाते हैं। उन्होंने वज़ीफ़ा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को बधाई देते हुए गुरसिक्खी जीवन में दृढ़ रहने के लिए प्रेरणा की। उन्होंने संगत से भी अपील की कि वह अपने बच्चों को बाणी और बाणे के साथ जोड़े, ताकि विद्यार्थी इन योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ ले सकें।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य भाई रजिंदर सिंघ महिता, ओएसडी स. सतबीर सिंघ (धामी), सचिव स. बलविंदर सिंघ काहलवां व इंजी. सुखमिंदर सिंघ व स. गुरिंदर सिंघ मथरेवाल, निजी सचिव स. शाहबाज सिंघ, अपर सचिव स. बिजै सिंघ, उप सचिव स. हरभजन सिंघ वक्ता व स. सुखबीर सिंघ, प्रिंसिपल डॉ. कुलविंदर सिंघ, डॉ. गुरजीत सिंघ, डॉ. रुपिंदर सिंघ, बीबी मनिंदरपाल कौर, श्रीमती ममता, सुप्रिंटेंडेंट स. निशान सिंघ, इंचार्ज स. जोगेशवर सिंघ, चीफ़ अकाउंटेंट स. मनिंदरपाल सिंघ आदि उपस्थित थे।

बेअदबी से सम्बन्धित कानून को लेकर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने आयोजित की पंथक जत्थेबंदियों की सभा

श्री अमृतसर साहिब : ६ अप्रैल : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बेअदबी के मामलों से सम्बन्धित सरकार द्वारा कानून बनाने को लेकर आयोजित पंथक सभा में समूची सिक्ख जत्थेबंदियों ने एकसुर होकर सरकार को श्री गुरु ग्रंथ साहिब की जागत-ज्योति गुरुआई, सत्कार, परंपरा,

विलक्षणता के मद्देनज़र कानून बनाने से पहले पंथक भावनाओं की प्रतिनिधिता को यकीनी बनाने के लिए कहा। यह सभा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय सरदार तेजा सिंघ समुंदरी हाल में हुई, जिसमें शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी के अलावा श्री अकाल तख़्त साहिब के कार्यकारी जत्थेदार व तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी कुलदीप सिंघ गड़गज्ज, तख़्त श्री दमदमा साहिब के जत्थेदार ज्ञानी टेक सिंघ, सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के कार्यकारी मुख्य ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी अमरजीत सिंघ, दमदमी टकसाल के प्रमुख बाबा हरनाम सिंघ ख़ालसा, शिरोमणि पंथ अकाली बुड्ढा दल के प्रमुख बाबा बलबीर सिंघ ९६वें करोड़ी, दल बाबा बिधीचंद संप्रदाय के प्रमुख बाबा अवतार सिंघ सुरसिंघ, पंथ अकाली तरुणा दल के प्रमुख बाबा निहाल सिंघ हरियां वेलां, बाबा जोगा सिंघ बाबा बकाला साहिब, बाबा सेवा सिंघ कार सेवा श्री खडूर साहिब, बाबा कशमीर सिंघ कार सेवा भूरी वाले, तख़्त श्री हजूर साहिब बोर्ड के चेयरमैन स. विजैसतबीर सिंघ, तख़्त श्री पटना साहिब से भाई गगनदीप सिंघ सहित सिक्ख जत्थेबंदियों, संप्रदायों, निहंग सिंघ दलों, कार सेवा वाले महापुरुषों, स्टडी सर्कल, सिक्ख मिशनरी कॉलेज, उदासी, निर्मले व सेवापंथी संप्रदायों के प्रमुखों ने शमूलियत की।

इस अवसर पर विभिन्न वक्ताओं ने संबोधित करते हुए कहा कि सिक्ख मसलों से सम्बन्धित कोई भी कार्य करते समय सरकारें सिक्ख संस्थाओं व सिक्ख जत्थेबंदियों की राय अवश्य लें। यदि सरकारें अपनी मनमर्ज़ी से सिक्ख मसलों से सम्बन्धित कार्रवाई करेंगी तो ये अधूरी साबित होंगी। इस अवसर पर बहुसंख्यक वक्ताओं द्वारा यह विचार प्रमुख तौर पर सामने आया कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बेअदबी के मामले कौम के लिए अति गंभीर और चिंताजनक हैं, जिसके प्रति सख़्त सज़ा का प्रावधान तो होना ही चाहिए, परंतु यह सरकारी स्तर पर मनमर्ज़ी के साथ बनाए जाने वाले कानून द्वारा संभव नहीं है, क्योंकि इस मामले में कानून सिक्ख विचारधारा की दिशा में बनना चाहिए, जिसके लिए पंथक राय के बिना यह मुकम्मल नहीं माना जाएगा। उन्होंने कहा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बेअदबी को रोकने के लिए प्रस्तावित कानून में स्पष्टता अति आवश्यक है, ताकि इसके दुरुपयोग की संभावना न रहे। वक्ताओं ने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि आज हमें बेअदबी मामलों के दोषियों को सज़ा देने के सवाल से पहले इस बात पर मंथन करना ज़रूरी है कि बेअदबी की घटनाएँ क्यों हो रही हैं और सरकारें इसके प्रति बेपरवाह क्यों हैं।

सभा में वक्ताओं के विचार जानने के बाद शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने एक विशेष प्रस्ताव पेश किया, जिसे हाज़रीन ने जयकारों की गूँज में प्रवानगी दी। पंथक सभा द्वारा पारित किये गए इस प्रस्ताव में स्पष्ट तौर पर कहा गया कि सिक्खों के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब हाज़िर-नाज़िर, जाग़त-ज्योति, चवर छत्र तख़्त के मालिक गुरु पातशाह हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज पवित्र गुरबाणी केवल एक मार्गदर्शन न होकर साक्षात् और प्रत्यक्ष रूप से गुरु का दर्जा रखती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की यह विलक्षणता दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा ज्योति-जोत समाने से पूर्व सिक्खों को किये गए आदेश के कारण है। इसके

मद्देनज़र श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बेअदबी की घटनाएँ चिंताजनक होने के साथ-साथ सिक्ख कौम के हृदय को चोटिल करने वाली हैं। इन पर रोक लगाना बेहद लाज़िमी है। चाहे गत समय में विभिन्न सरकारों ने कौम की माँग को मुख्य रखते हुए इस मामले पर कानूनी व्यवस्था करने का यत्न किया, लेकिन इसमें कोई ठोस और सफल प्राप्ति सामने नहीं आ सकी। मौजूदा पंजाब सरकार द्वारा इस सम्बंध में कानून बनाने की प्रक्रिया बेशक अच्छी बात है लेकिन यह केवल एक सरकारी पहुँच तक ही सीमित रह गई है, जबकि इसमें से पंथक विचार और सुझाव बिलकुल आलोप हैं।

प्रस्ताव में कहा गया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सिक्खों की नुमाइंदा और जवाबदेय संस्था है, इसलिए इसकी जिम्मेदारी है कि यह प्रत्येक पंथक मामले पर कौम की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करे, इसलिए पंथक सभा महसूस करती है कि समूचे पंथ की राय शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के माध्यम से सरकार तक पहुँचे और यह ज़रूरी भी है, क्योंकि बनाया जाने वाला कानून न केवल एक आम कानून है, बल्कि यह पंथ की चिंतन-प्रक्रिया में से पैदा हुआ एक विधान है। यदि इसमें पंथक भावना शामिल नहीं रहेगी तो यह सकारात्मक परिणाम नहीं दे सकेगा। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बेअदबी की घटनाओं को रोकने के लिए बनाया जाने वाला कानून केवल एक राजनैतिक टूल नहीं होना चाहिए, बल्कि यह एक प्रतिबद्धता और समर्पण की दिशा में ऐसे विधान की योजनाबंदी होनी चाहिए जो धर्म के जीवन-मूल्यों की रक्षा, श्रद्धा और विश्वास के पुख़्ता प्रबंध की प्रतिनिधिता के साथ-साथ सिक्ख कौम के दैवीय सिद्धांतों के प्रति भी वचनबद्ध हो। यह तभी संभव है यदि इसकी स्थापना में कौमी विचारधारा शामिल होगी। पंजाब सरकार इस अति संजीदा मामले पर अपनी मनमर्ज़ी न करे और किसी भी तरह कौमी एकजुटता की राय प्राप्त करने के लिए यत्न करे।

प्रस्ताव में माँग की गई कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की जाग़त-ज्योति गुरुआई, सत्कार, विलक्षणता तथा कौमी भावनाओं के मद्देनज़र सरकार से मांग की जाती है कि कानून बनाने से पहले इन पंथक विचारों की प्रतिनिधिता को सुनिश्चित किया जाए। यह भी कहा गया कि सरकार कानून का मसौदा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को भेजे, जिस पर पंथक भावनाओं के अनुसार तुरंत मशविरा भेजा जायेगा।

श्री अकाल तख़्त साहिब के कार्यकारी जत्थेदार ज्ञानी कुलदीप सिंघ गड़गज्ज ने अपने संबोधन में बेअदबी की घटनाओं की रोकथाम के लिए व्यवस्था की ज़रूरत के साथ-साथ इस बात पर भी ज़ोर दिया कि सिक्ख धर्म के मामलों में सरकार को कोई भी कानून समूचे पंथक दलों की राय व शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के परामर्श के बाद ही अमल में लाना चाहिए। यदि सरकार सामूहिक पंथक राय के बिना कुछ भी करती है तो वह मंज़ूर नहीं होगा।

दाख़िला सूचना

पंथ-रत्न जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा इंस्टीट्यूट ऑफ अडवांस्ड स्टडीज़ इन सिक्खिज़म बहादरगढ़ (पटियाला)

गुरमुखी टीचिंग ट्रेनिंग के लिए त्रैवार्षिक डिग्री कोर्स

बैचलर ऑफ आर्ट्स इन गुरमुखी एजूकेशन

BACHELOR OF ARTS IN GURMUKHI EDUCATION

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब वर्ल्ड यूनिवर्सिटी, फतहिगढ़ साहिब)

लड़के तथा लड़कियों के लिए

योग्यता

- शैक्षिक योग्यता 12वीं कक्षा (कोई भी ग्रुप) उत्तीर्ण हो तथा गुरसिक्ख होना लाज़मी है।
- 12वीं कक्षा के परिणाम के लिए प्रतीक्षारत उम्मीदवार भी अप्लाई कर सकते हैं।
- उम्मीदवार की आयु-सीमा अधिक से अधिक २२ वर्ष हो।
- **किसी भी विषय-समूह (Any stream) में कम से कम 45% अंकों के साथ 12वीं कक्षा पास हो।**

सुविधाएं

- रिहायश के लिए नि:शुल्क छात्रावास के अलावा हरा-भरा चौगिर्दा, सुंदर पार्क, खेल और पुस्तकालय की सुविधा।
- उच्च योग्यता वाला स्टाफ, स्मार्ट क्लास-रूम और कंप्यूटर लैब की सुविधा।
- शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अदारों में नौकरी के वक्त प्राथमिकता।
- धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से भोजन (लंगर) आदि के ख़र्च के लिए 2000/- रुपए प्रति माह वज़ीफ़ा।

भविष्य

- कोर्स के पश्चात् विद्यार्थी यूनिवर्सिटी नियमों के अनुसार ई.टी.टी., बी.एड. और धर्म, इतिहास, पंजाबी, एजूकेशन आदि विषयों में एम.ए. कर सकते हैं।
- सरकारी और ग़ैर-सरकारी अदारों में स्नातक स्तर की असामियों के लिए योग्य।
- शिक्षार्थी, सिक्ख/पंजाबी शैक्षिक अदारों, गुरुद्वारा साहिबान और धार्मिक/समाजसेवी संस्थाओं में गुरमुखी अध्यापक के तौर पर सेवा निभाने के योग्य होंगे।

दाख़िला संबंधी अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

97810-10888, 90416-20861, 75270-56756

E-mail : tohrainstitute@gmail.com

Visit us : www.sggswu.edu.in

2000/- रुपए प्रति माह वज़ीफे की सुविधा

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी,
शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब।

हरजिंदर सिंघ एडवोकेट
प्रधान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब।

Registered with PRGI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2026-28 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB//R-001/2026-28

GURMAT GYAN

May 2026

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

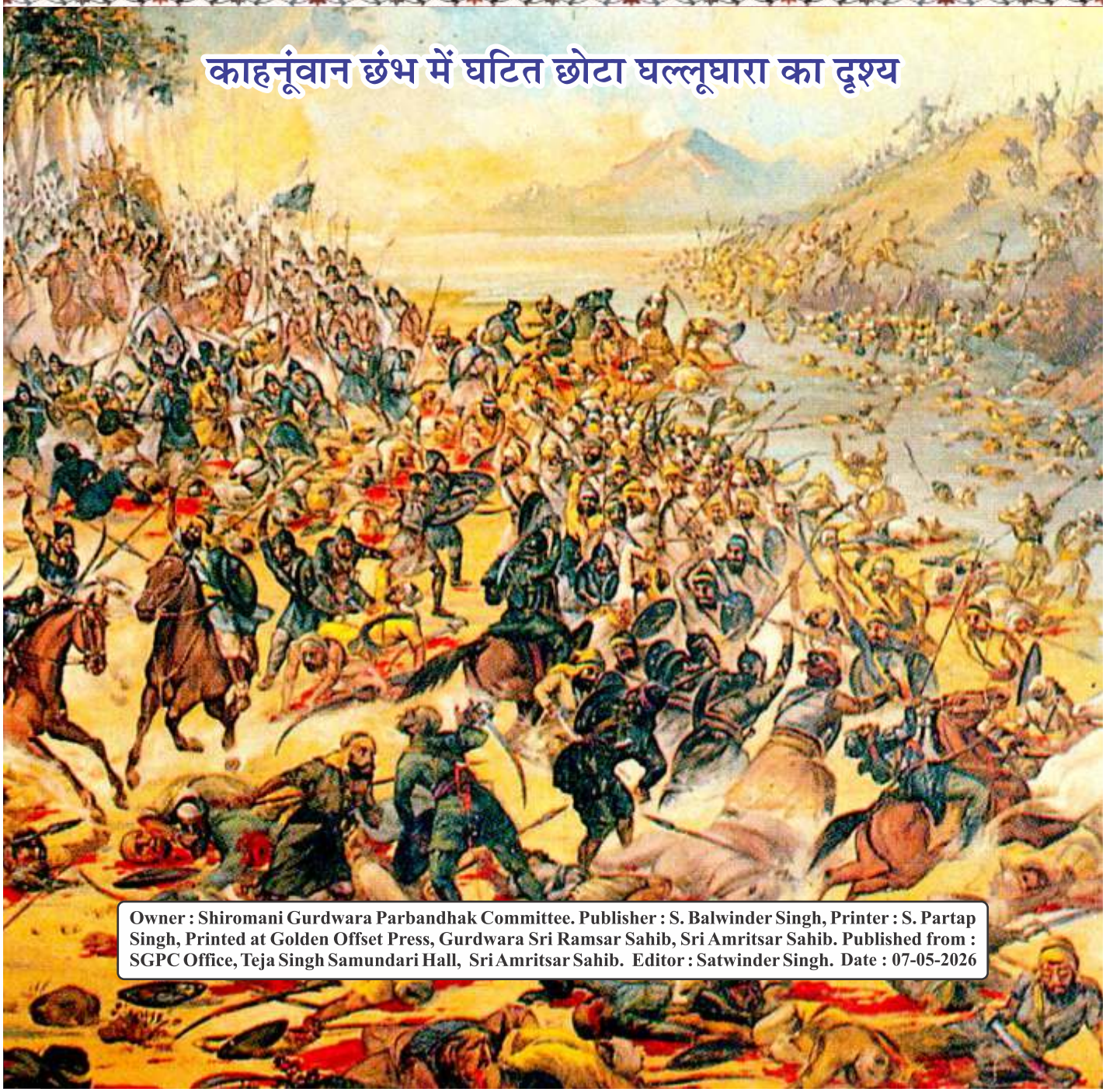

काहनूंवान छंभ में घटित छोटा घल्लूघारा का दृश्य

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher : S. Balwinder Singh, Printer : S. Partap Singh, Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from : SGPC Office, Teja Singh Samundari Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh. Date : 07-05-2026